निर्मला योग

द्विमासिक वर्ष ३ अंक १५ सितम्बर-अक्टूबर १९८४

गीत

हे जग जननी ! तुझे प्रणाम।
तेरे गुण गायें हम आठों याम॥

गंगा यमुना से भी बढ़कर,
तेरा यह प्रेम प्रवाह।

कट जाते सब पाप जन्मों के,
हो जाती पूरी सब चाह॥

हे जग वंदनि ! तुझे प्रणाम।
तेरे गुण गायें हम आठों याम॥१॥

सारे जग में अब तेरे,
प्रेम की गंगा बह रही है।

तेरी ज्योति से जन मानस,
जग रही है॥

है दिव्य जननी ! तुझे प्रणाम।
तेरे गुण गायें हम आठो याम॥२॥

खिल रहे हैं कमल सर्वत्र,
छाने लगे सुगंध।

दशों दिशाओं में गायें,
गुणगान मकरंद॥

हे सहस्रदल स्वामिनी ! तुझे प्रणाम।
तेरे गुण गायें हम आठों याम॥३॥

हैं हम दास तेरे,
तेरी इच्छा के हैं गुलाम।

करें समर्पण चरणों पर तेरे,
तन मन जीवन धन धाम॥

हे मोक्ष प्रदायिनी मां ! तुझे प्रणाम।
तेरे गुण गायें हम आठों याम॥४॥

सम्पादकीय

परमपूज्य आदिशक्ति श्रीमाताजी ने विश्व निर्मला धर्म की स्थापना कर दी है। विश्व निर्मला धर्म की मर्यादा के अन्दर रहना और उसकी रक्षा करना प्रत्येक सहजयोगी का परम कर्तव्य है।

समस्त विश्व की रक्षा के लिए विश्व निर्मला धर्म से प्राणी-मात्र को अवगत कराना हमारा परम पुनीत कार्य है।

श्रीमाताजी से हम सभी प्रार्थी हैं कि वह हमें शक्ति और निष्ठा प्रदान करें ताकि हम अपने कर्तव्य को समुचित रूप से पूरा कर सकें।

निर्मला योग

४३, बंगलो रोड, दिल्ली-११०००७

संस्थापक : परमपूज्य माता जी श्री निर्मला देवी

सम्पादक मण्डल : डॉ शिव कुमार माथुर
श्री आनन्द स्वरूप मिश्र
श्री आर. डी. कुलकर्णी

प्रतिनिधि कनाडा : श्रीमति लोरी हायनेक
३१५१, हीदर स्ट्रीट
वैन्कूवर, बी. सी.
वी ५ जैड ३ के २

यू.एस.ए. श्रीमती क्रिस्टाइन पैट्रूनीया
२७०, जे स्ट्रीट, १/सी
ब्रुकलिन, न्यूयार्क-११२०१

भारत : श्री एम० बी० रत्नान्नवर
१३, मेरवान मैन्सन
गंजवालालेन, बोरीवली
(पश्चिमी) बम्बई-४०००९२

यू.के. श्री गेविन ब्राउन
ब्राउन्स जियोलॉजिकल इन्फ़र्मेशन
सर्विस लि.,
१३४ ग्रेट पोर्टलैण्ड स्ट्रीट
लन्दन डब्लू. १ एन. ५ पी. एच.

इस अंक में .....

		पृष्ठ
१. सम्पादकीय	...	१
२. हृदय व विशुद्धि चक्र (परमपूज्य माताजी का प्रवचन)	...	३
३. परमपूज्य श्री माताजी का प्रवचन	...	१८
४. श्री माताजी निर्मला देवी के १०८ नाम	...	३०
५. गीत	...	द्वितीय कवर
६. गीत	...	तृतीय कवर
७. भजन	...	चतुर्थ कवर

हृदय व विशुद्धि चक्र

दिल्ली १६ मार्च, १९८४

सत्य को खोजने वाले सारे भाविक, सात्विक साधकों को मेरा प्रणाम।

कल आपको मैंने अपने अन्दर बसा हुआ जो नाभि चक्र है उसके बारे में बताया था कि ये नाभि चक्र हमारे अन्दर सबसे बड़ी शक्ति देता है जिससे हम अपने क्षेम को पाते हैं। जैसे कि कृष्ण ने कहा था "योग क्षेम वहाम्यहम"। पहले योग होना चाहिए, फिर क्षेम होगा। योग के बगैर क्षेम नहीं हो सकता और क्योंकि हमने इस देश में पहले योग को खोजा नहीं इसलिए हमारा देश क्षेम को प्राप्त नहीं। क्षेम के बारे में मैंने बताया था कि दुनिया में, हम लोग सोचते हैं, कि जिन देशों में सभ्यता हो गयी और बहुत पैसा हो गया तो लोग हमसे कहीं अधिक सुखी हैं। ये बड़ी गलतफ़हमी है।

अभी मैं एक जगह वर्णानिगर महाराष्ट्र में वहाँ गयी थी। वहाँ एक 'कौरे' साहब हैं, उन्होंने बहुत मेहनत करके उस वर्णानगर में सुभत्ता लायी हुई है। वहाँ पर जिस तरह से लंदन में बड़े-बड़े Departmental Stores हैं इस तरह के Stores हैं और सब तरह के प्रसाधन वहाँ मिलते हैं। औरतों के लिए वहाँ पर सब शोभा के लिए beauty aids (सौन्दर्य प्रसाधन) वगैरा सब कुछ हैं। वहाँ जाने पर लगता है कि जैसे आप विलायत के किसी अच्छे district (जिला) की जगह पर आ गए। कौरे साहब विचारे निःस्वार्थी, शान्त-चित्त, धार्मिक और बहुत सरल, शुद्ध और सादे आदमी हैं। वो मेरे पैर पर गिरके रोने लगे। कहने लगे, "माँ, ये सब मैंने किया। लेकिन मैं बड़ा अशान्त हो गया हूँ।" मैंने कहा, क्यों, क्या बात है? आपने तो बहुत कुछ पा लिया। यहाँ सबकी सुभत्ता आ गयी। कहने लगे, मैंने एक बात नहीं जानी थी कि इस सुभत्ता से दुनिया इतनी खराब हो जायेगी। हमारे यहाँ लोग जो हैं इतने आदततयी हो गये हैं। यहाँ शराब इस कदर ज्यादा चलने लग गयी है। यहाँ पर बच्चे बिलकुल बाहियात हो गये हैं। यहाँ पर कोई किसी की सुनता नहीं। औरतें भी अपने को पैसे में ही तोलने लग गई हैं। ये सब देखकर के मुझे लगता है कि ये मैंने क्या कर दिया। मेरी तो कोई सुनेगा नहीं, क्योंकि गाड़ी बहुत चल पड़ी। लेकिन माँ आप सन्त हैं, आप कहेंगे तो आपकी बात ये लोग शायद सुन लें और शायद मुड़ पड़ें। क्योंकि ये रास्ता ही इन्होंने गलत ले लिया है। इनके यहाँ divorces (तलाक) होने लग गये इनके बच्चे भाग करके आजकल गांजा वगैरा पीते हैं और बड़ी दुर्दशा है। जो कुछ भी हमने किया—बहुत बिचारों ने किया हुआ है—लेकिन वो कहते हैं कि यहाँ मनुष्य बिलकुल शान्त नहीं। और बहुत दुखी जीव हैं, आपस में झगड़े, टंटे। किसी भी तरह से व्यवस्था वहाँ पर कुटुम्ब की नहीं है, जिसे आप कह सकते हैं कि ये कुटुम्ब ठीक है।

इसलिए मैंने आपसे कल कहा था कि हमारे अन्दर लक्ष्मी का तत्व जागृत होना चाहिए। और लक्ष्मी का तत्व कुण्डलिनी से जागृत होता है। पैसा

आप दुनिया में कमा सकते हैं। आज पंजाब का हाल देखिए, जहाँ लोगों ने कितना लाखों रुपया कमा करके ऐसा सोचा था कि अब हममें और आकाश में कोई अन्तर नहीं रह गया। उस वक्त भगवान का नाम भी लेना उस पंजाब में मुश्किल हो गया। और आज उसी पंजाब का ये हाल है कि लोगों को समझ नहीं आ रहा कि क्या होने वाला है। वही हाल हरियाणा का है। इतने जोर से ये लोग अपने को बढ़ावा देते चले गये। लेकिन इन्होंने ये नहीं सोचा कि हमारी जड़ कहाँ है। उस जड़ को पकड़ा नहीं। इसलिए उध्वस्त होकर के रह गए। यही हाल पुर्तगाल का है, यही हाल इंग्लैंड का है। हरेक देश में आप जाइए, तो लग रहा है धीरे-धीरे जैसे इन पर हर तरह की गरीबी, हर तरह की परेशानियां, हर तरह की दुष्टता धीरे-धीरे छा रही है। अपने शहरों में भी यही हाल हो रहा है।

इसकी वजह क्या है ? ऐसी कौन सी बात है, जिसके कारण मनुष्य खराब हो गया है ? एक ही वजह सीधी है कि उसके अन्दर लक्ष्मी तत्त्व जागृत नहीं है। उसके अन्दर अगर पैसा आ जाए, तो पैसा बहुत ही दुखदायी चीज है। निरा पैसा अगर किसी में आ जाए तो उससे बढ़कर दुखदायी चीज और कोई नहीं हो सकती। अब अपने मूल की ओर दृष्टि देनी चाहिए।

बहुत से लोग हैं जो कि पैसे से परमात्मा को भी खरीद सकते हैं। और इसलिए वो मंदिरों में जाते हैं, वहाँ बहुत-बहुत पैसे देकर मंदिर बनवाते हैं, गुरूद्वारे बनवाते हैं और दुनिया भर की चीजें करते हैं। और बहुत से लोग ऐसा सोचते हैं कि हम किसी गुरू को पैसा दे दें तो उसको हम खरीद सकते हैं।

आप परमात्मा को नहीं खरीद सकते। आप सब दुनिया खरीद सकते हैं, परमात्मा को आप नहीं खरीद सकते, और इसलिए इस पैसे में ये शक्ति नहीं है कि आप अपनी 'शान्ति' को प्राप्त करें। इसमें ये शक्ति नहीं है कि इससे आपको अपना आनन्द मिले। इसमें ये शक्ति नहीं है कि आपका चित्त उस ऊंचे स्तर पर जाए। आप बिलकुल नीचे गिरते-गिरते ऐसी दशा में पहुँच जाएंगे कि आपको स्वयं आश्चर्य होगा कि हम इतनी ऊंची हस्ती से कहाँ आकर गिरे।

इसलिए हमारे अन्दर कुण्डलिनी का जागरण बहुत आवश्यक है। ये जागरण जब नाभि चक्र से और तरफ फैलता है, चारों तरफ, तो मैंने आपसे कहा था कि यहाँ गुरू का तत्त्व है जो आपको सन्तुलन देता है। अभी आपने जो गाना सुना, ये स्वयं पार हो गए। साक्षात्कार हो गया इन्हें। इसलिए इनमें बहुत ही फ़र्क आ गया है गाने में। और वो गाना जो है वो आन्दोलित करता है आत्मा के तार को। क्योंकि भारत का जो संगीत है ये भी 'ओम्' से बना हुआ है। हमारे साथ बहुत से विदेशी लोग रहते हैं हर समय, और हमेशा अपने Indian classical music (भारतीय शास्त्रीय संगीत) को बिलकुल बेसुध होकर सुनते हैं। ऐसे राग जो कि 'श्री' और 'मारवाह'—ऐसे राग कि जो हम लोगों ने सुने भी नहीं। जो हम सुनते भी नहीं। हम लोग तो आजकल इतने सस्ते गाने सुनने लग गये हैं। सब मामले में हम लोग इतने cheap (सस्ते/हल्के) हो गए हैं। हमारे तौर-तरीके, हमारे रहन-सहन के तरीके, बात-चीत के तरीके, हमारे खान-पीन के तरीके, सब चीज इतनी बिलकुल ओछी हो गयी है कि हम जानते नहीं कि हमारा संगीत कितना ऊंचा है। इस संगीत में सारा 'ओ३म्' है। लेकिन आजकल के संगीतकार भी शराब पीते हैं, हर तरह के व्यसन में घुले हुए हैं। पैसा कमाने के लिए music (संगीत) गाते हैं। न ही उन्होंने कभी परमात्मा को जाना और न ही उधर उनकी रुचि है। फिर ऐसे संगीतकार क्या दे सकते हैं ? इस संगीत को जानने के लिए भी आपको चाहिए कि आप अपनी आत्मा को प्राप्त

करें। नहीं तो इसको गहराई में आप नहीं जान सकते। अब इतने foreign (विदेश) के लोग हैं हमारे साथ में। हर जगह classical music (शास्त्रीय संगीत) का प्रोग्राम होता है और एक-तान सुनते हैं। उनसे पूछिए कि भई तुमने क्या सुना? वो उस पर किसी भी तरह का वाद-विवाद नहीं करते। वो कहते हैं कि ये जो ये आत्मा का संगीत है, इससे हमारे हाथ के vibrations (चैतन्य लहरियाँ) बढ़ते हैं और हमें परम शान्ति मिलती है। लेकिन हमारे लोगों के सामने तो आज कल classical music (शास्त्रीय संगीत) गाना मानो जैसे घबड़ा करके इंसान गाए कि कहीं गाए और पता नहीं लोग लट्ठ न मारने आ जाएं। बहुत सस्ते तरह का music गजलें और इस तरह का संगीत आजकल हमारे यहाँ प्रचलित हो गया है, जिसमें कि किसी भी तरह की परमात्मा की बू तक न आए। इतना गंदा music आजकल हमारे यहाँ चलने लगा है। न जाने कैसे आजकल हिन्दुस्तान में लोगों ने ये सब चीज मान ली। पहले कुछ गंदे राजे-महाराजे या नवाब लोग ऐसे गाने बैठकर सुनते थे। Democracy (जनतन्त्रवाद) का मतलब ये हो गया कि हर आदमी वैसा ही गंदा महाराजा बन गया या गंदा नवाब बन गया है। Democracy (जनतंत्रवाद) का मतलब ये ही हो गया है कि जितनी गंदगी इन सब दुष्ट लोगों में थी, जिनके पास सत्ता या थोड़ा-सा पैसा था, वही हमारे अन्दर भी आ जाए। ये सबसे बड़ी demonocracy (राक्षसवाद)—मैं तो इसे demonocracy (राक्षसवाद) कहती हूँ—जिससे हरेक आदमी demon (राक्षस) होने पर लगा हुआ है। इस democracy से किस आदमी में आपने पाया है कि वो उठकर के कोई विशेष हो गया: कोई आदर्श ऐसा इंसान जो ठोस खड़ा होकर कहे कि कोई मुझे छू नहीं सकता, कोई मुझे खरीद नहीं सकता?

इस देश में जितना भी राजकारण है, जब तक वो धर्म पर नहीं होगा तब तक यहाँ के राजकारी लोग आएंगे, मिटेंगे, लोग थूकेंगे उन पर। लेकिन इनका राजकारण चलने नहीं वाला, धर्म जब तक अपना नहीं हो सकता है, क्योंकि यह देश हमारा भारतवर्ष धर्म पर खड़ा हुआ है। जब तक धर्म पर हम राजकरण करना सीखेंगे नहीं, रामचन्द्रजी का जब तक हम राजकरण लाएंगे नहीं, Socrates (सुकरात) का राजकारण हम जब तक लाएंगे नहीं, तब तक ये देश कभी भी आगे नहीं बढ़ सकता।

ये देश की भूमि और है, इसकी जमीन और है। ये समझना चाहिए। इसकी आत्मा और है। इसको अगर छूना है तो महात्मा गांधी जैसे अपने धर्म पर खड़े होओ—जिस आदमी के लिए आप हाथ उठा करके कह सकते थे कि ये आदमी शुद्ध है, स्वच्छ है और धर्म पर खड़ा हुआ, हमेशा परमात्मा को याद करने वाला है। जो आदमी परमात्मा को याद नहीं करता और परमात्मा के प्रति जिसकी दृष्टि नहीं, इतना ही नहीं, अपने जीवन में जिसके धर्म नहीं, वो इस देश में कभी सफलीभूत हो नहीं सकता। होगा, लेकिन थूकेंगे लोग उस पर। उस पर जब इतिहास लिखेगा, तो कहेगा, "इस आदमी ने इस देश का घात किया।" ये अपना देश है, ऐसा ऊंचा देश है। इस देश के लिए जिनको भी कार्य करना है, पहले अपने धर्म पर खड़े हो।

जिसको देखिए वही राजकारण में चला आता है। मैं देहात में गयी, मैंने किसी से कहा कि भाई तुम क्या कर रहे हो? "मैं राजकारण कर रहा हूँ।" मैंने कहा ये कोई धंधा है? ये क्या चीज हुई, राजकारण कर रहे हैं! जैसे कि जो उठा वही राजकारण करने लग गया।

आज मैं आपके सामने जो चक्र बताने वाली हूँ जिस पर श्रीराम विराजमान हैं। और इसीलिए

मैंने आपसे बताया कि श्रीराम का राज्य इस संसार में आना चाहिए। सबसे पहले इसे हिन्दुस्तान में लाना पड़ेगा। जिसने देश के कारण, लोगों के मत के कारण, अपनी पत्नी का त्याग किया। हालांकि वो आदिशक्ति थी, वो जानते थे कि इनके कोई हाथ नहीं लगा सकता—तो भी, इतनी बड़ी मिसाल उनके जीवन की हमारे सामने है और कितने धार्मिक, संकोचपूर्ण, कितने अनुकम्पा से भरे हुए श्रीराम। वो हमारे सामने आदर्श होने चाहिएं। ऐसा हमारे सामने नायक होना चाहिए जिसे हम देखकर कहें कि ऐसे हम बनें। आजकल आप सिनेमा का नायक देख लीजिए, तो वो शराब पीता है, खून खराबा करता है। हर तरह के गलत काम करता है और नायक, नायक का मतलब क्या है? हिन्दुस्तान में ऐसा नायक पहले नहीं होता था। ये अंग्रेजों के नायक होएंगे, या किसी····। उनके यहाँ तो था ही नहीं कायदे का आदमी। उनके यहाँ कौन रामचन्द्रजी हो गए। एक राजा ने अपनी सात बीवीयों की गर्दन काट डाली। बताइये! सात रानियों की जिसने गर्दन काट दी, वहाँ पर एक राजा साहब वो बैठे हुए हैं। वहाँ किसी भी राजा का आप जीवन पढ़ें तो इस कदर शराबी-कबाबी, दुनिया भर की उसमें गंदगी भरी हुई है। और वो वहाँ का राजा है और वहाँ तो भी, ये कहना चाहिए, ये होते हुए भी, वहाँ लोग ये जानते हैं कि जब तक हम सही रास्ते से नहीं चलेंगे, righteousness (सदाचार) से नहीं रहेंगे, हमारा राज्य चल नहीं सकता। हालांकि वैसी बात है नहीं, क्योंकि उनके बुनियाद में ही नहीं है बातें। हमारे बुनियाद में क्या? एक से एक, शिवाजी जैसे शाह महाराजा शिवाजी जैसे थे। उनका चरित्र क्या था? कितने उज्जवल आदमी थे! माँ के भक्त थे। उनकी माँ कितनी तेजस्वी स्त्री थीं। एक एक को देखिए हमारे यहाँ, कि हमारा इतिहास भरा पड़ा है; राणा प्रताप। मैं अभी आ रही थी लाजपतनगर यहाँ से। मैंने कहा लाला लाजपतराय क्या आदमी थे। मुझे इत्तफाक हुआ उनके बारे में जानने का। मेरे पिता भी कांग्रेस में थे बहुत पुराने। मैंने एक-एक आदमी देखे हैं। क्या लोग थे!

इनके जैसे लोग अब दिखाई नहीं देते। ये मंगिल्ले मंगिल्ले लोग इस देश में कहाँ से आ गये, मेरी समझ में नहीं आता। इनको क्या कहना चाहिए कि जो अपने को हिन्दुस्तानी कहलाते हैं और जिनके अन्दर जरा सा भी ध्येय नहीं है। कोई भी तत्व नहीं है। बगैर किसी तत्व के संसार में आप कैसे चल सकते हैं?

सारे देश आपकी ओर आँख उठाये देख रहे हैं कि ये इतनी बड़ी democracy (जनतंत्र) ये demonocracy (राक्षसतन्त्र) बन रही है, कि कि ये कुछ विशेष चीज है? इसका एक ही इलाज है कि आप धर्म को प्राप्त हों। जब तक आपके देश में धर्म नहीं आएगा, आप चाहे दुनिया इधर से उधर कर लीजिए, ये देश आप शासन में नहीं ला सकते। यहाँ अराजकता आएगी, यहाँ अशासन आएगा। हमने अपनी, इसमें देखा है कभी भी हम देहात से जा रहे हैं, कहीं से भी जा रहे हों, सन्तों के प्रति इतनी श्रद्धा हर एक जगह है! हर एक जगह। कोई मजाल नहीं कि कोई वहाँ पर अराजकता करता हो।

वो सन्तों की श्रद्धा, वो भक्ति का सागर जो है उसे समेटना चाहिए। उस पर बुनियाद डालकर के जिस दिन हम अपनी देश की नई नींव डालेंगे, तभी हमारा देश असल में स्वतंत्र होगा। क्योंकि स्वतन्त्रता, गांधी जी लड़े स्वतंत्रता के लिए। अगर वो जीवित होते तो कहते "स्व" का "तन्त्र" खोजो। "स्व" का तन्त्र ही सहजयोग। "स्व" के बारे में जानना ही स्वतन्त्रता है।

ऐसा होना चाहिए और होगा भी, क्योंकि चौदह हजार वर्ष पूर्व नाड़ी ग्रन्थ में लिखा हुआ है कि ऐसा होगा इस वक्त में। और सारे दुनिया के देश यहाँ पर झुक कर आएंगे और हमसे सीखेंगे कि

धर्म क्या है और परमात्मा क्या है। ऐसा होना चाहिए। लेकिन आप लोग सब अपने पर विश्वास रखें, सहजयोग में गहरे उतरिये तभी ये कार्य हो सकता है।

हृदय चक्र जो है उसमें तीन उसकी sides हैं। एक तो left (बांये), एक right (दायें) और एक बीच की। right side में श्रीराम का स्थान है। श्रीराम जो पितातुल्य हैं, जोकि benevolent king (उदार राजा) हैं। जो Socrates (सुकरात) ने बताया ऐसे राजा थे। जिनको सिवाय लोगों के हित के और कुछ सूझता नहीं था। हित कैसे होगा, लोगों का ठीक कैसे होगा, उनका भला कैसे होगा। उन्होंने जो कुछ किया है, इस संसार में, सिर्फ एक विचार से कि मनुष्य का भला कैसे होगा। नंगे पाँव वन में गये कि वहाँ की भूमि उनके चरणों से vibrate (चैतन्यमय) हो जाए। सारा नाटक खेला दुःखदायी नाटक था। शरीर तो उनका था ही जो सहन करता था, लेकिन ये सारा नाटक उन्होंने खेला सिर्फ ये दिखाने को कि एक आदर्श राजा कैसा होना चाहिए। एक आदर्श पिता कैसे होने चाहिए। एक आदर्श पुत्र कैसे होना चाहिए। ये आपका right heart (दायां हृदय) है। अगर कोई भी इंसान का right heart (दायां हृदय) पकड़ता है, माने ये कि किसी भी इंसान में कोई पिता का दोष हो। समझ लीजिए उसके पिता की मृत्यु जल्दी हो गयी। उसने पिता का सुख न देखा हो, या अगर उसका अपने पिता से सम्बन्ध ठीक न हो, या पिता अगर गलत रास्ते पर चलता हो या वो पिता से दुश्मनी लिए हुए है। कोई-सा भी पिता का जो तत्व है अगर खराब हो जाए तो ऐसे आदमी का right heart (दांया हृदय) पकड़ता है और ऐसे आदमी को asthma (दमा) होने का अंदेशा है। अब देखिए कहाँ से बात कहाँ ला दी। इस वक्त आपको श्रीराम का ध्यान करना चाहिए, जब आपको asthma हो। इससे आपका asthma ठीक हो सकता है।

अब आपके left hand side (बांयी तरफ) में जो heart (हृदय) के चक्र का दोष होता है, वो आपकी मां की वजह से आता है। अगर आपकी मां परमात्मा में विश्वास नहीं करती, आपको गलत रास्ते पर ले जाती है, या जरूरत से ज्यादा आपको प्यार करके आपको खराब करती है तो भी मां बड़ी दोषी है।

Jung (युंग) ने अपने एक experiment (प्रयोग) में ऐसा देखा कि एक इंसान आकर के उसे बार-बार बताता था कि मेरी मां का मुझे स्वप्न आता है कि वो एक witch (पिशाचिनी) है, एक राक्षसनी है। बार-बार मुझे ऐसा स्वप्न आता है। तो उन्होंने अब लड़के से पूछा कि भाई तुम्हारी मां का तुम्हारे साथ व्यवहार कैसा है। उन्होंने कहा कि भई मेरी मां तो ऐसी हैं कि मुझको इतना pamper (अत्याधिक लाड़) करती हैं, इस क़दर उसने मुझे spoil (बिगाड़) करके रखा है कि मैं किसी काम का नहीं। उन्होंने कहा ठीक है, इसका मतलब है तुम्हारी मां राक्षसनी है इसका स्वप्न तुम्हारे अचेतन से, unconscious से आ रहा है और तुमको बता रहा है कि सम्भल के रहो। एक आदमी बताता था कि मुझे अपने बेटे के बारे में ऐसा हमेशा स्वप्न आता है कि वो सिंहासन पर बैठा है और उसके सामने मैं हमेशा नतमस्तक हूँ। Jung (युंग) ने पूछा कि तुम्हारा अपने लड़के से कैसा रिश्ता है? कहने लगे मैंने दूसरी शादी कर ली। मैं उस लड़के की परवाह नहीं करता हूँ। वह तो घर में नौकर जैसा ही है, किसी काम का नहीं। और मुझे ऐसा स्वप्न आता है। अचेतन उसे बता रहा था कि तुम्हारा लड़का जो है वो सिंहासन पर बैठने लायक है, और तुम उसके नीचे खड़े हुए हो, उसके नतमस्तक तुम्हें रहना चाहिए, बजाय इसके कि उससे तुम छल करो और उसे तुम किसी तरह से, इस तरह से व्यवहार करो जिससे वो नगण्य हो जाए।

यही बात है कि मां और बाप का बहुत बड़ा देना बच्चों को होता है। एक तो अपने देश में मां बाप का इस क़दर अपने बच्चों के प्रति स्वार्थ होता है, इतना ज्यादा स्वार्थ होता है कि आश्चर्य है ! इसी देश में पन्ना धायी जैसी औरतें हो गयीं। इसी देश में ऐसे लोग हो गये जिन्होंने अपने बच्चे देश के लिए कुर्बान कर दिए। हम खुद अपने बाप की बात कह सकते हैं कि जो हम लोगों को कुर्बान करने में एक क्षण भी न ठहरें, और उसमें वो बड़ा अपने को गर्व समझते थे। और ऐसे हमने अनेक इनके मित्रों को देखा और अनेक लोगों को देखा उस उम्र के, जो अपने बच्चों से कहते कि कुर्बान हो जाओ अपने देश के लिए।

वो गया एक तरफ भगतसिंह का जमाना और आज ये आया है कि मेरा बेटा, मेरी बेटी, मेरा, मेरा, मेरा। यहाँ पर भी जो बता रहे थे, बात सही है कि आकर के मेरा बाप ऐसा, मेरी मां ऐसी, मेरा बेटा ऐसा, मेरा ये ऐसा। दूसरा extreme (पराकाष्ठा) है इंगलेंड में जो मैंने आप से कल बताया कि अपने बच्चों को ही मार डालते हैं। काम सफ़ा।

ये दो extremes (पराकाष्ठाओं) के बीच में मनुष्य को रहना चाहिए। अपने बच्चों के प्रति भी आपका बड़ा भारी परम कर्त्तव्य है कि उनको खराब न करें। उनको ये नहीं लगना चाहिए कि हमारे मां बाप हमारे आदर्शों से छोटे हैं। लड़के हैं सिगरेट पीते हैं बचपन से। उनको बुरी आदतें लगती हैं। इसका कारण उनके मां बाप हैं। और कोई नहीं। अगर लड़के बिगड़ते हैं तो मां बाप उसके कारण हैं। मां बाप अगर उनके साथ रहें, उनके साथ घूमें फिरें, उनसे दोस्ती करें, उनसे इज्जत से पेश आएं तो बच्चे नहीं बिगड़ सकते ।

अब ये दोनों चक्र जो हमारे अन्दर हैं। और मां के दोष से अनेक रोग आ सकते हैं। मां के दोष से ऐसे ऐसे रोग आते हैं कि जिसका निवारण करते-करते हम पगला जाते हैं। खास कर टी. बी. की बीमारी जो ये मां से होती है। किसी को अगर टी. बी. की बीमारी है तो जिसकी मां बचपन में मर गयी हो या मां का प्यार जिसे न मिला हो, जिस आदमी ने मां को जाना नहीं उसे टी. बी. की बीमारी हो जाती है। आप सोचिए इस देश में, इस महान देश में जहाँ मां की लोग पूजा करते हैं, वहाँ कितने लोगों को टी. बी. हो जाती है। इसका मतलब ये है कि माँ जो है बच्चों को खराब कर रही है, मां उनको दोष लगा रही है, मां उनसे बुरी तरह से पेश आ रही है। इसका मतलब ये नहीं कि आप बच्चों को हर समय डांटते रहें, फटकारते रहें। लेकिन अपनी प्रतिष्ठा के साथ, अपने बच्चों के सामने ऐसा एक उदाहरण रखना चाहिए कि बच्चे देखें कि ये देखिए ये हमारी मां हैं, उनका बर्ताव कैसा है और हमारा बर्ताव कैसे है। आप ही उनके सामने अगर बहुत cheap (अभद्र) तरीके से रहें, रात दिन अपने शृंगार में लगी रहें या पति से हर समय लड़ती रहें, तो वो बच्चा भी आपकी क्या इज्जत करेगा ? स्त्री में जब तक वो बात नहीं आएगी, तब तक बच्चे में कैसे आएगी ? वही बात पिता की है। अगर पिता स्वयं शराब पीता है आवारा है, घूमता है, घर में नहीं बैठता है, बच्चों से मिलता जुलता नहीं है, बीवी को बातें सुनाता है, ऐसों के बच्चे कैसे होंगे ? क्या बड़े अच्छे हो सकते हैं ?

वो जगह जहाँ "यान्हनेवे भागने लग्न संस्कार" छोटे-छोटे उम्र में जो संस्कार हमारे ऊपर लगते हैं वो ऐसे ही होते हैं जैसे कि जिस घड़े के कच्चे रहते वक्त जो उस पर दाग पड़ जाए, उसी प्रकार वो पक्के हो जाते हैं। उस वक्त इतना सम्भालना जरूरी है, इतना उनको प्रेम देना जरूरी है कि जिससे उनकी जो बुद्धि है वो कायदे से हो जाए। पर ऐसा होता नहीं है। ज्यादातर ऐसा होता नहीं है। हम या तो उनको ज्यादा ही पानी देते हैं और या नहीं देते। बीचों-बीच खड़े रहकर

के देखना चाहिए कि हमारे बच्चे किस रास्ते पर चल रहे हैं।

फिर ये कहना समाज ऐसा बना हुआ है, माँ क्या करें ? लड़के खराब हो ही जाते हैं। कैसे ? आपका चित्त ही नहीं है बच्चे की ओर। कम से कम आप तो कोई शिकायत नहीं कर सकते। इंगलैंड, अमेरिका में तो लड़कों को dole (बेरोज़गारी भत्ता) मिल जाता है १८ साल में, तो वो बेकार जाते हैं। पर आप लोग, आप लोग तो जिन्दगी भर उन बच्चों को पालते हैं। "फिर भी क्या हुआ थोड़ा सा शराब ही तो पीता है ना। सिगरेट पीता है तो आजकल सभी पीते हैं, उसकी गंदी आदतें है थोड़ी बहुत, औरतों के पीछे भागता है कोई हर्जा नहीं !"—इस तरह से आप अपने बच्चों के प्रति अपना रुझान रखें, ये तो इसको मैं कहती हूँ कि आप उनके दुश्मन हो गये। क्योंकि जो आप का कर्त्तव्य है उससे अगर आप च्युत हो गए तो आपने उनको तो ऐसे ही गड्ढे में धकेल दिया। यहाँ तक मैंने सुना है, कुछ लोग जो अपने को बहुत अंग्रेज समझते हैं कि 'साहब मैं तो अपने बेटे के साथ बैठकर शराब पीता हूँ।" क्या कहने आपके ! इस प्रकार की जिनकी मनोवृत्ति है ऐसे लोग जाने क्यों मां बाप हो जाते हैं ? और होने पर भी उन बच्चों को रात दिन खराब किये जाते हैं। नहीं तो इतना बच्चों के साथ कड़ा रुख होता है कि बच्चे घर से भाग खड़े हैं। सोचते हैं हमारे मां बाप का हमारे प्रति कोई प्रेम ही नहीं। उनको कोई दुलार ही नहीं है।

इसलिए मैं कहती हूँ कि आप सहजयोग में अपने बच्चों को लाएं। पार होने के बाद फिर हम देख लेंगे। उसके बाद बात और हो जाती है। पर पहले आप पार होइये। अगर मां बाप की ही अक्ल खराब हो तो बच्चों को पार करा के भी क्या फ़ायदा ? वो तो गलत रास्ते अपने जो हैं आप बच्चों को सिखाएंगे और हम उनको सही रास्ते सिखाएंगे तो वो कहेंगे, हमारे बाप तो एक बात कहते हैं और माताजी दूसरी बात कहती हैं।

साक्षात्कार-प्राप्त हमारी लड़की की लड़की है। वो realised soul है। वो एक दिन कहती है कि "नानी एक बात बताइये ये जो शेर होता है पूर्व जन्म में कुछ खराब काम किए होंगे। मैंने कहा क्यों ? क्यों कि उसके मां बाप कहते हैं कि तुम इंसान को खाओ और उसको भगवान कहता है कि मत खाओ, तो वो क्या करे ? देखिए ! उसके सामने ये प्रश्न खड़ा हो गया कि इसने पूर्व जन्म में कुछ बुरे कर्म करे होंगे, नहीं तो ये ऐसे मां बाप से क्यों पैदा हुआ कि जो कहते हैं इंसान को खा लो। यही प्रश्न हमारे दिमाग में आना चाहिए आखिर ऐसा कौन सा हमने पूर्वजन्म में कर्म किया है कि जिसके कारण हम अपने बच्चों को ठीक रास्ते पर नहीं लगा सकते। ये दोनों चक्र ठीक हो जाने से, आपकी मां और बाप, ये दोनों स्थितियां जो हैं ठीक हो जाती हैं। आप अगर बाप हैं तो आप बाप की दृष्टि से ठीक हो जाते हैं। अगर आप पुत्र हैं तो आप पुत्र की दृष्टि से ठीक हो जाते हैं। अगर आप मां हैं, तो आप मां की दृष्टि से ठीक हो जाते हैं। अगर आप मां की बेटी हैं या पुत्र हैं तो उस तरह से ठीक हो जाते हैं। ये दोनों चक्र ठीक हो जाने से ही अपने देश के जो नव-युवक हैं ये संभलेंगे।

आप जानते हैं कि हजारों लोग परदेश से हमारे शिष्य हैं। इनके मां-बाप तो पागल ही लोग हैं अधिकतर। वो लोग शराब पीना, रात भर बाहर रहना। वहाँ की औरतें चार-चार बार शादियाँ करती हैं। आदमी छः छः बार शादियाँ करते हैं। और सब अनाथालय में बुढ़ापा काटते हैं। ऐसे बिचारों ने कौन से पूर्वकर्म किए हैं कि उनको ऐसे माँ-बाप मिले। पर ये लोग जब सहज-योग में आ गए तब से सम्भल गए हैं कि अब हमारी शादियाँ हो गयीं सहजयोगियों में। अब हमारे यहाँ बड़े-बड़े ऋषि मुनि पैदा हो रहे हैं। और इनके लिए हमें कैसे बर्ताव रखना चाहिए। उन्होंने

एक नयी धारा बना ली है कि इनके सामने किस तरह से रहना चाहिए। जो जो भी कार्य अब सहजयोग में हो रहा है, उसमें सबसे बड़ी चीज जो ध्यान में रखने की है कि हमारी आत्मा क्या बोलती है। और आत्मा शब्दों से बोलती नहीं है। ये चैतन्य लहरियों से बोलती है और उसी से जाना जाता है कि हम कहाँ चल रहे हैं।

अब बीच का जो चक्र है, ये साक्षात् देवी जगदम्बा का है। जो कि सारी सृष्टि की मां है। ये जगदम्बा जो है ये भक्तों का रक्षण करती है। जो भक्त, इस गोल जगह बना हुआ जगह जहाँ है, जहां पर कि भक्त लोग सब भगवान को खोजते हैं, उनका रक्षण करती है। उनके लिए उन्होंने राक्षसों का वध किया, उनका रक्त पिया, उनके भूतों के भूत खा लिए, उन्होंने संहार कर करके इन लोगों को ठीक किया।

बहुत से लोग ऐसा कहते हैं, भई हिन्दुओं के देवी देवता जो हैं ये बड़े क्रूर हैं, और nonvegetarian (मांस भक्षी) हैं। तो मैं कहती हूँ अगर ये राक्षसों को देवी न खाए तो क्या आप लोग खाइयेगा? इन राक्षसों को देवी न मारे तो क्या आप लोग मारियेगा? कंस को अगर कृष्ण नहीं मारते तो क्या आप लोग मारते? रावण को राम न मारते तो कौन मारता? उस पर बहुतों का ये कहना है, कि ये तो देव यौनी के लोग हैं और ये सबको मारते रहते हैं। इस तरह का विचार करने से आप जो दुष्ट और राक्षस हैं उन सबको खोपड़ी पर बिठा लें। उनका नाश न करिए, उनको आप किसी तरह से नष्ट न करिए, उनके साथ कोई दुर्व्यवहार न करिए, उनको बिठा करके उनकी आरती उतारिए।

जगदम्बा ने अनेक बार जन्म लिए। इनके ऐसे तो नौ जन्म बहुत विशेष माने जाते हैं, लेकिन उनके हजार जन्म कम से कम हुए हैं। और हजार बार संसार में आकर उन्होंने, जो भक्त लोग थे, उनकी रक्षा की। जब ये चक्र आपके अन्दर जागृत हो जाता है, जब जगदम्बा का चक्र आपके अन्दर जागृत हो जाता है तो आपके अन्दर से भय, आशंका सब भाग जाती है। कोई किसी प्रकार की भय-आशंका नहीं रह जाती।

जिस वक्त किसी स्त्री में ये चक्र पकड़ जाता है जब भय हो जाता है उसे या उसका विशेष करके जब left heart (बांया हृदय) उसका पकड़ता है और उसे ये लगता है कि उसका मातृत्व जो है, उस पर ही आघात आ रहा है, उसका पति जो है और औरतों के पीछे भाग रहा है, उसके मातृत्व को ही अब किसी तरह से लांछन आने वाली है तब उसको जो बीमारी होती है इसे हम लोग breast cancer कहते हैं। ये इन दो चक्रों की वजह से औरतों में होती है। विशेष करके left चक्र की वजह से, जब कि माँ का मातृत्व जो है वो आदमी सोचता है कि हमें क्या करना है, हमारी बीवी है तो क्या, बच्चे हैं तो क्या। हम जैसे चाहेंगे, हमें स्वतन्त्रता है, हम जैसे चाहे रहें। ऐसे पतियों की परेशानी की वजह से औरतों को breast cancer हो जाता है। इंग्लैंड, अमेरिका में भी लोग कहते हैं इसमें क्या है? ये सब कुछ ठीक नहीं? एक ही पत्नी क्यों होनी चाहिए? और औरतें भी कहती हैं एक ही पति क्यों होना चाहिए? पर वहाँ फिर औरतों को breast cancer क्यों हो जाता है? और आदमियों को परेशानियाँ क्यों हो जाती हैं? अगर ये चीज कुछ अच्छी होती, नैसर्गिक चीज होती, तो मनुष्य उससे सुखी होता। पर आपने कभी देखा है जिस आदमी ने अपनी पत्नी को छोड़ा है और दूसरे आदमी के साथ स्वेच्छाचार कर रहा है वो सुखी है?

तो इस वजह से हमारी जो विवाह संस्था है उसका बड़ा मान करना चाहिए। और ये समझ लेना चाहिए कि अपनी पत्नी जो है ये घर की गृहलक्ष्मी है। इसका अपमान करने से, इसको दुख देने से, इसको तकलीफ़ देने से हम अपनी घर की

गृहलक्ष्मी को सता रहे हैं। अर्थात् जैसे मैंने कल आपसे बताया कि गृहलक्ष्मी को भी इस योग्य होना चाहिए कि वो गृहलक्ष्मी कहलाये।

लेकिन ये सब होते हुए, ऐसी पत्नियों और ऐसी दुखी पत्नियों को, अगर कोई तकलीफ़ हो जाए, तो उसके लिए हमें समझ लेना चाहिए कि इनके घर में हो कोई तकलीफ़ ऐसी बन रही है जिसकी वजह से ये स्त्री बिचारी धीरे-धीरे घुलती जा रही है।

अब जो जगदम्बा का चक्र है उसकी वजह से जब पकड़ जाता है, तब मनुष्य जो है वो भीतु हो जाता है, डरपोक हो जाता है, उसको भय सा रहता है, वो हर समय डरता है। कैसे भाषण दें, क्या बोलें, किससे क्या कहें, मुझे तो डर लगता है। मैं नहीं कह सकता। और जब उसका ये चक्र ठीक हो जाता है तब उसके अन्दर धैर्य आ जाता है। वो उद्दंड नहीं होता, वो किसी तरह से arrogance (उद्दण्डता) नहीं करता, लेकिन उसकी भाषा में एक तरह की ममता, उस मां की, जो कि उसके अन्दर जागृत हो गयी है, आ जाती है। लेकिन वो किसी से डरता नहीं। ईसा मसीह का उदाहरण आप देख लीजिए कि जिन्होंने सूली पर चढ़के ये कहा कि प्रभु ये लोग जानते नहीं, क्या करें, इन को माफ़ कर दें। वो ही हाथ में हंटर लेकर के उन्होंने सबको मारा था जो वहां पर चीजें बेच रहे थे। और जिस तरह मारी मगदालनी (नामक) एक वेश्या थी—वेश्या और सन्तों का क्या सम्बन्ध, कुछ हो ही नहीं सकता—जब लोग उसको पत्थर उठाकर मारने लगे तो उनके सामने जाकर के छाती खोल कर खड़े हो गए और कहा कि तुममें से जिसने कोई पाप नहीं किया हो, वो मुझे पत्थर मारे। ये हिम्मत! ये अपने पर विश्वास। ये देवी की कृपा से, मां की कृपा से होता है! इसलिए हमारे यहां शक्ति को बहुत बड़ा मानते हैं। लेकिन हम लोग खुद ही अपने को शक्तिहीन कर लेते हैं। कितने लोग संसार में हैं जो ये समझते हैं कि मां का स्थान बहुत ऊंची चीज है। श्री गणेश इतने ऊंचे स्थान पर इसलिए हैं क्योंकि वो अपनी मां को ही मानते हैं और किसी को मानते ही नहीं। क्यों कि वो जानते हैं कि मां ही शक्ति हैं। गुरू दुनिया भर के, जो भी सही गुरू हो गए, वो भी मां को मानते हैं। वेद हैं वे भी मां को मानते हैं। दुनिया में कोई भी ऐसा शास्त्र नहीं जो आदि मां को न मानता हो। और हम भी मां को मानते हैं। लेकिन हम ये नहीं जानते कि मां चीज कितनी ऊंची है। कभी-कभी ये भी होता है कि मनुष्य के अन्दर आशंका और भय इस वजह से आता है कि—उसको उसके मां बाप से वो प्यार, वो संरक्षण हो सकता है—उसे किसी और भी वजह से भय आ जाए, उसकी कोई सी भी वजह हो जाए, उसमें जाने की जरूरत नहीं। हम लोग psychologist (मनोवैज्ञानिक) जैसे ये नहीं पूछते बैठते कि भई तुम्हारे बाप कैसे हैं, तुम्हारी मां कैसी है, तुम्हारी क्या कैसा। ज्यादा से ज्यादा ये पूछेंगे कि तुम्हारे मां बाप जिन्दा हैं या नहीं। लेकिन जैसे ही वो जागृत हो जाता है, जैसे ही ये चक्र जागृत हो जाते हैं, मनुष्य एकदम शेर दिल हो जाता है। शेर दिल हो जाता है। क्योंकि देवी जी शेर पर ही विराजती हैं। बहुत से लोग दुर्गाजी को मानते हैं। मैं मानती हूं कि उनके प्रति बहुतों की श्रद्धा है और उनके बारे में जानकारी बहुत कम है। बहुत कम जानकारी है कि वो कितनी प्रभावशाली हैं और एक बार अगर उनको प्रसन्न कर लीजिए तो दुनिया में किसी से डरने की बात नहीं।

इसके बाद जो चक्र इससे ऊपर है, जिसे कि विशुद्धि चक्र कहते हैं, ये बहुत महत्वपूर्ण चक्र है। ये चक्र श्री कृष्ण का है और अब होली आ रही है, कल ही। श्री कृष्ण के चक्र पर जितना कहें सो कम। इस चक्र में सोलह कलियां हैं, क्योंकि सोलह उनकी कला हैं-श्री कृष्ण की। और उनकी जो सोलह हजार बीवियां थीं वो उनकी सारी शक्तियां थीं,

जिनको कि उन्होंने इस संसार में जन्म देकर के उस राजा के यहाँ फंसाया और उसके बाद उनसे विवाह कर लिया। कृष्ण की लीला समझने के लिए भी सहजयोग करना पड़ता है। उसके बगैर आप कृष्ण को नहीं समझ सकते। उनके होली का अर्थ भी आप नहीं समझ सकते, होली क्या थी? होली में यही था कि जो पानी जमुना जी में बहता था उसमें श्री राधा के पैर पड़ने से वो चैतन्यमय हो जाता था, उस पानी को गगरी में लेकर के उस में लाल रंग घोल करके और जब वो किसी के पीठ पर छोड़ते थे तो वो असल में उनकी कुण्डलिनी ही जागृत करते थे। उन्होंने बचपन में जो कुछ उनकी लीलाएं की सबमें सहजयोग किया। उस वक्त कोई ऐसे हॉल (hall) नहीं बने हुए थे। ऐसे परमात्मा को खोजने वाले लोग नहीं थे। कोई इस तरह की व्यवस्था नहीं थी। ऐसे यंत्र नहीं थे। ये तो सब अब देन हो गयी है अपने Science (विज्ञान) की, कि जिसको हम इस्तेमाल कर सकते हैं। उस वक्त उन्होंने जो लीलाएं करी वो सब लीला सिर्फ सहजयोग की थी। जैसे कि गोपियां थीं वो जब पानी भरने जाती थीं, वो अपने सर पर गगरी रखके जब लौटती थी तो पीछे से उनको कंकड़ मारते थे। उससे वो जो पानी था, जो चैतन्यमय उनके पीठ के रीढ़ की हड्डी पर दौड़े, जिससे इनमें जागृति आ जाए। रास, रास माने 'रा' माने शक्ति और 'स' माने साहित्य। जैसे सहज है वैसे ही। हाथ में सबके हाथ पकड़ करके और अपनी शक्ति सबमें वो दौड़ाते थे और इसी को 'रास' कहते थे। ये 'रासलीला' जो होती थी, उसी से वो शक्ति दौड़ा करके और लोगों को जागृत करते थे।

मैं जब अमेरिका में पहली बार गयी वहां पर एक इंजीनियर Lord साहब मिले। उन्होंने कभी भी तो, उन दिनों में मैं तो गयी हुई थी १९७३ में, उन दिनों उन्होंने कोई कृष्ण के बारे में सुना नहीं था और वो आहियो में बीचों-बीच अमेरिका के रहते थे। उनको कुछ मालूमात नहीं था। लेकिन जब उनको realisation (साक्षात्कार) हुआ तो मुझे कहने लगे कि मां मैंने एक अजीब चीज देखी realisation के बाद। मैंने पूछा क्या देखा? कहने लगे मैंने ये देखा कि बहुत से हम लोग बच्चे खेल रहे हैं और एक बड़ा प्रदीप्त लड़का है जिसका रंग थोड़ा सांवला है, लेकिन बड़ा प्रदीप्त है, और वो हम लोगों का पिरामिड (pyramid) बना कर हमारे ऊपर चढ़ गया। और ऊपर में एक मिट्टी का pot (घड़ा) रखा हुआ था। उसको उसने अपने हाथ की एक लकड़ी से तोड़ा। और वो हमारे सब के ऊपर घर-घर-घर, देखिए, बहने लग गया। और बहते ही हमारे अन्दर एकदम चैतन्य आने लगा। उसने जो बात बतायी तो मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि इसने कैसे जाना। उसने कभी जाना नहीं था कि गोपाल काला क्या होता है और ये जाकर के ऊपर क्यों तोड़ते थे। ये ही उनकी लीला थी, जिससे वो सबके सहस्रार पर चढ़के और वहाँ से वो पानी तोड़ते थे जिससे सबके ऊपर घर-घर पानी नीचे आ जाए, जिससे लोग जागृत हो जाएं।

उनकी सारी लीलाएं जितनी थीं सब सहजयोग की थीं। और उन्होंने जो कृषि की है इसलिए उनको कृष्ण कहा जाता है। उन्होंने जो कृषि की है वही आज बढ़कर के आप लोगों के रूप में मेरे सामने आज वो तैयार चीज आयी हुई है जिससे कि उसके फल का देना मेरे लिए साध्य है, मुझे देना ही होगा। ऐसे कृष्ण के बारे में क्या कहूं और कितनी बातें बताएं।

गीता, जिसके बारे में लोग हजारों बातें कहते हैं, समझने के लिए भी आपको सहजयोग में आना चाहिए। उसके बगैर आप गीता भी नहीं समझ सकते। सिर्फ गीता पढ़ पढ़ के कुछ गीता समझ में नहीं आएगी। गीता जो, जिसने सुनायी है, वो कौन थे। पहले उनके बारे में जान लेना चाहिए।

बड़े होशियार हैं। होशियार ही नहीं थे, वो उस वक्त के राजदूत थे, और diplomacy का बिल्कुल जो अर्थ है, essence है, उसको जानते थे। अब diplomacy का क्या essence है? कि कोई ऐसी absurd (वाहियात) बात करो कि जिसके करने से आदमी मुंह के बल गिरे। कृष्ण का खेल जो है उसको समझने के लिए पहले आपको सहजयोग में उतरना चाहिए। अच्छा, मैं समझाने की कोशिश करती हूं। लेकिन आप समझने की कोशिश करें।

जैसे कि उन्होंने शुरू शुरू में ही बता दिया। क्योंकि दुकानदार तो थे नहीं कि पहले बुरी चीज दिखाओ, फिर धीरे-धीरे अच्छी चीज दिखाओ। तो उन्होंने पहले ही बढ़िया चीज दिखा दी। उन्होंने कहा कि आपको ज्ञान होना चाहिए। ज्ञान माने क्या? बुद्धि से नहीं, बुद्धि से नहीं। ज्ञान माने आपके central nervous system में आपको जानना चाहिए, आपको प्रचीती होनी चाहिए, कि परम क्या है जिससे आप स्थितप्रज्ञ होते हैं। साफ साफ उन्होंने दूसरे ही chapter (खण्ड)में कह दिया, व्याख्या दे दी कि सहजयोगी कैसा होना चाहिए। पर उसके बाद उन्होंने देखा कि अर्जुन तो जो हैं वो अपनी लगा रहे थे। उन्होंने कहा कि इधर तो तुम कह रहे हो कि तुम साक्षी बनो, इधर तुम कह रहे हो कि तुम ज्ञानी बनो और उधर तुम कह रहे हो कि तुम युद्ध में जाओ। तो ये कैसे हो सकता है। अब तो जान गए कि ये सीधे नहीं आने वाले।

अर्जुन जो है उस वक्त का भक्त है समझ लीजिए। उसको वो, उसका वो प्रतिनिधित्व करता है, represent करता है। अर्जुन ने उनसे पूछा कि ये कैसे हो सकता है? कि अगर मैं साक्षी हो जाऊं, फिर तो मैं लड़ूंगा ही नहीं। वैसे भी मैं कुछ नहीं करूंगा, मैं बिल्कुल बेकार हो जाऊंगा। ये सब बातें क्या हैं? सो कृष्ण ने कहा अब इनको सीधे तरीके से समझाने से नहीं होगा। उल्टे तरीके से समझाओ। तो पहली चीज उन्होंने जो बतायी, वो बतायी बहुत मजे तरीके से, कर्म की। कि बेटे तुम कर्म करते रहो और सब कर्म परमात्मा के चरण में डाल दो। हो नहीं सकता, absurd (असंभव)! बहुत से लोग आकर कहते हैं, माताजी हम जो भी कर्म करते हैं वो हम परमात्मा के चरणों में डाल देते हैं। मैंने कहा 'अच्छा', ये कैसे? फिर आप कर्म ही नहीं करते। अगर आप परमात्मा के चरण में डालते हैं तो आप ऐसा क्यों कहते हैं कि मैं जो कर्म करता हूं? इस तरह की हमारे अन्दर अपने बारे में एक myth (भ्रान्ति) हम लोग बना लेते हैं कि हम तो भाई जो भी करते हैं परमात्मा के चरणों में डाल देते हैं। लेकिन कुछ ऐसे सयाने लोग हैं जो आकर कहते हैं कि मां हम तो सोचते थे कि मैं परमात्मा के चरणों में डालता हूं, पर होता नहीं है। कोई न कोई गड़बड़ बात। सो कृष्ण ने क्या कहा। उन्होंने जो बताया, एक absurd बात बता दी, कि आप ऐसा करते रहिए। माने जैसे आप समझ लीजिए, एक लड़का है वो बैलगाड़ी हांक रहा है और घोड़ा पीछे रखा है। तो बाप आया बाहर। उसने कहा, बेटा, क्या कर रहे हो, कहने लगा। मैं गाड़ी हांक रहा हूं। उन्होंने कहा, भई घोड़ा सामने करो तब गाड़ी हांकेंगे। नहीं, मैं तो गाड़ी हांकूगा। उन्होंने कहा, अच्छा, हांकते रहो, घोड़े पर चित्त रखना। जब तक तुम घोड़े पर चित्त रखोगे, तो फिर गाड़ी चलेगी। और वो गाड़ी चली नहीं। लेकिन मां की ये बात नहीं। मां ने कहा 'बेटे' वो घोड़ा सामने रखो और बांधो, नहीं तो घोड़ी नहीं चलने वाली। और न ही घोड़ी चलेगी और न ही तुम्हारी गाड़ी चलने वाली है। तुम जब तक ये नहीं करोगे तब तक हो नहीं सकता। पहले आत्मा को प्राप्त करो फिर आगे की बात करो। जब आप पार हो जाते हैं तो आप क्या कहते हैं, "आ रहा है, जा रहा है, हो रहा है।" आप ये नहीं कहते कि मैं आ रहा हूं, मेरे अन्दर से आ रहा है, मैं ये हूं, मैं कर रहा हूं। ऐसे तो कोई नहीं कहता। अभी आपने सहजयोगियों को देखा होगा 'मां इनका नहीं बन रहा, इसका नहीं जमता है, ये जमने नहीं वाला"। Third

person (तृतीय पुरुष) में आदमी बात करने लगता है—अकर्म ! हम अमेरिका गए थे तो एक स्त्री हमारे साथ गयी थी। वो कहने लगी, मां मेरे लड़के को जरूर पार करा देना। मैंने कहा भाई तुम ही certificate दे दो। मैंने तो हाथ तोड़ डाले, अब तुम ही पार करा दो। कहने लगी, मां, लेकिन अगर पार नहीं होता तो कैसे certificate दें। तो मैंने कहा, यही तो बात है। जब होता ही नहीं है वो पार, तो तुम उसको false (झूठा) तो certificate (सर्टीफिकेट) दे नहीं सकतीं तो उसको पार कराओ। पहली बात पार कराओ। ये तो नहीं कह सकते कि तुमने पार करा दिया। क्योंकि जब हुआ नहीं तो पार कैसे ? वो तो होता ही नहीं। तो जो तृतीय पुरुष में हम लोग बोलना शुरू करते हैं, अकर्म में मनुष्य हो जाता है, वो ये नहीं सोचता मैं कर रहा हूँ। कोई विचार ही नहीं आता कि आप अकर्म में कर रहे हैं, कोई काम कर रहे हैं। कोई लोग कहते हैं, मां आपने हमें ठीक कर दिया। मुझे तो याद भी नहीं रहता। मैं पूछती हूँ, भैया क्या बीमारी थी, बताओ। कहने लगे, मां भूल गये ? मेरे को angiana (अन्जायना) था, मैं (होस्टन) Houston जा रहा था। अच्छा भैया, क्या हो गया, सो अब क्या बात है। हो गया न, ठीक ! हाँ आप भूल गये क्या ? मैंने कहा, हाँ मैं तो भूल गयी। मुझे तो याद नहीं कि मैंने तुमको ठीक कर दिया, क्योंकि कृष्ण के हिसाब से आप अगर विराट में आप समा गये, विराट के आप अंग प्रत्यंग हो गए हैं, अकबर हो गये हैं, जिसे हम अल्लाह-हो-अकबर कहते हैं, वो अगर आप अल्लाह हो गये हैं। तो आपकी ये उंगली जो है, उसी का एक हिस्सा है। अब इस उंगली को अगर आपने थोड़ा सा कुछ rub (मसल) करके या इसको कुछ किसी तरह से संजो करके ठीक किया तो क्या आपने अपने ऊपर उपकार किया है कि दूसरों के ऊपर उपकार किया। दूसरा है कौन ? दूसरा कौन है ? ये भावना ही टूट जाती है कि कोई दूसरा है। क्योंकि आप उस परमात्मा के अंग और प्रत्यंग बन जाते हैं। यही विराट का स्वरूप है। लेकिन स्वरूप को पाना चाहिए और Jung (श्री युन्ग) ने साफ-साफ कहा है कि अब मनुष्य कभी उठेगा तो वो collectively conscious (सामूहिक चेतनायुक्त) होगा। सामूहिक चेतना में जागृत होगा। ये नहीं कि हम आप भाई-भाई। और अगर मौका मिला तो कल सरफुटव्वल। अब आप हमारे शरीर के अंग प्रत्यंग बन गये। सामूहिक चेतना में आप जागृत हो गये। तभी कृष्ण का काम होगा। यही विशुद्धी चक्र है, जो यहाँ जा करके विराट बन जाता है। इस सर में जो सात चक्र हैं उसके पीठ है, उस पीठ पर बैठे हुए वो विराट हैं।

सो इस कृष्ण को समझने के लिए जब कृष्ण भक्ति हुई, तो कृष्ण ने उसमें भी चालाकी करी है। क्योंकि भक्त भी बड़े आसानी से हाथ नहीं लगते। वो भी एक one trek mind (एक ही रास्ते पर चलने वाला दिमाग) जिसे कहते हैं, बस, लग गये, तो लग गये अब हम भक्ति कर रहे हैं भगवान की। कृष्ण ने कहा कि 'पत्रम् पुष्पम् फलं तोयम्' जो भी पत्र, पुष्प, फल, पानी कुछ भी आप दीजिएगा, हम स्वीकारेंगे। लेकिन देने के time (समय) में एक शब्द में उन्होंने नचाया है जो लोगों की समझ में नहीं आता। कहा है कि लेकिन तुमको 'अनन्य' भक्ति करनी होगी। 'अनन्य' जब दूसरा नहीं रह जाता, जब आप हमारे अंग प्रत्यंग हो जाते हैं। जब परा-भक्ति में आप उतरते हैं तब हम लेंगे, उससे पहले नहीं। लेकिन 'अनन्य' शब्द को तो हम खा गये, और बड़े-बड़े Lecture (भाषण) लोग देते हैं। मैंने देखा हुआ है, घन्टों Lecture (भाषण) देते हैं। सीधे तीन इसमें आप समझ सकते हैं, उनका कर्म योग, उनका ज्ञान योग और उनका भक्ति योग। कि अगर परमात्मा को पाना है तो पहले उसके अंग प्रत्यंग बनना चाहिए, 'अनन्य' होना चाहिए। जब तक आप अनन्य नहीं हैं, अनन्य भक्ति जो है उसको

प्राप्त होना चाहिए। ये कृष्ण ने साफ-साफ कह दिया है। लेकिन जो पंडित होते हैं और जो वेदाभ्यास करते हैं वो शायद चश्मे की वजह से वो चीजें देखते ही नहीं जो देखने की होती है। और कृष्ण को समझने के लिए तो तीक्ष्ण दृष्टि चाहिए क्योंकि बुद्धि की बिल्कुल पराकाष्ठा है। आप, उसके सामने आप ठहर ही नहीं सकते उनकी बुद्धि के सामने, इतने प्रकाशवान बुद्धिमान वो हैं। और वो चाहते हैं आपको जरा नचाएं जिससे आप ठीक रास्ते पर आएं। 'अब मैं नाच्यौ बहुत गोपाल'। और जब ये आप उससे कहिएगा कि भईया अब नचाना बंद कर और मुझे तो बस अपने आत्म-साक्षात्कार में उतार ले, तब ही उतरते हैं। इस लिए उन्होंने कहा मुझे तू शरणागत हो जा। कृष्ण शरणागत हो जा तो। इस विशुद्धि में बसे हुए श्री कृष्ण जो हैं इनको आपको जागृत करना पड़ेगा। जब तक ये जागृत नहीं होंगे तब तक आपको विशुद्धि चक्र की तकलीफ़ रहेगी।

अब विशुद्धि चक्र में भी तीन अंग हैं: right, left और बीच में। जब श्री कृष्ण बाल्यावस्था में थे, जब उनका जन्म हुआ, जब उनकी बहन विष्णु-माया थी तब उनका left side में, यहाँ पर प्रादु-र्भाव था, बाल कृष्ण की तरह। और जब वो बड़े होकर के राजा हो गए तो उनका right side यहाँ पर 'विट्ठल' यहाँ पर कि वो राजा बन करके और द्वारिका में राज्य करने गए। और बीचों बीच साक्षात् श्री कृष्ण जो कि हर हालत में श्री कृष्ण हैं। इस तरह से इस चक्र के तीन अंग हैं। अब जिनकी आदत बहुत ज्यादा डाँटने की, चिल्लाने की, चीखने की और दूसरों को अपने शब्दों में रखने की और दूसरों को बुरी तरह से बात करने की और दूसरों को दुःख देने की अपने शब्दों से, ऐसी आदतें जिस आदमी की होती है उसकी right विशुद्धि पकड़ी जाती है। और उससे अनेक रोग उसे हो जाते हैं। जिस आदमी की ये आदत है कि सबके सामने गर्दन झुकी रहती है। चाहे जो भी कहो, हाँ भाई ठीक है, कोई भी गुरू आए उसके चरण छू लिए, उसके चरण छू लिए और सब चीज के चरण छूते फिरे रात दिन, उनकी left विशुद्धि पकड़ जाती है। जो आदमी अपने को हमेशा दोषी समझता है, जो समझता है कि मेरे में अनन्त दोष है, उसकी left side पकड़ जाती है। और जो मनुष्य अपने को सोचता है कि मैं तो दुनिया का सबसे बड़ा हूँ, मैं जो करूं सो कायदा, मैं जो कहूँ सो दिशा। ऐसा जो आदमी बोलता है उस आदमी की right side पकड़ जाती है। और right side पकड़ने से spondylitis (स्पोन्डिलाइटिस) और दुनिया भर की बीमारियाँ हो सकती हैं। Left side पकड़नेसे angina (हृदय में रक्त संचार कम होने से होने वाली बीमारी) वगैरह हो सकता है और right side पकड़ने से जुकाम, सर्दी इतना ही नहीं और जिसे हम कहते हैं कि asthma (दमा) उसका भी इसमें प्रादुर्भाव हो सकता है। जिस आदमी का बहुत काम करता है जो आदमी, और बहुत चीख-चीख के बोलता है और सबसे बहुत दरोगागिरी करता है उस आदमी को जो heart attack (दिल का दौरा) आता है जिसे हम active heart attack कहते हैं वो आदमी heart attack (दिल का दौरा) उसको आ करके, बहुत लोग तो बोलते ही बोलते साफ हो जाते हैं। भाषण देते ही देते समाप्त, सीधे। क्योंकि इस कदर अपने को वो शब्दों से दूसरों को दबाते हैं उनको नीचा करते हैं, उनके लिए ऐसी-ऐसी बाते कहते हैं जिससे दूसरा आदमी जो है एकदम आवाक् रह जाता है। और बहुत ही ज्यादा उद्दण्ड और घमंड और जिसे कहना चाहिए पूरी तरह से arrogant आदमी होता है जिसको किसी की भावना का विचार नहीं रहता है और उसे बुरी तरह से डांटता रहता है, ऐसा आदमी किसी भी बिमारी से प्रभावित हो सकता है और उसको दूसरी बीमारी जो हो सकती है वो है paralysis, heart attack, paralysis (लकवा, दिल का दौरा, लकवा)। हाथ उसका जकड़ सकता है right hand उसका जकड़ सकता है। ऐसे

आदमी जोकि अपने को बड़ा विद्वान समझते हैं उनकी तो ये हालत हो सकती है कि वो इतने अति विद्वान हो जाते हैं कि आपकी जो बुद्धि है वही आपको चकाने लगती है। वही आपके खिलाफ चलती है। Your intelligence cheats you at a point (आपकी होशियारी किसी वक्त पे आपको धोखा देती है) और अपने को, दूसरों को चकाते चकाते आप अपने को चकाने लग जाते हैं और आपको आश्चर्य होता है कि भई मुझी को मैं चका रहा हूँ। मैं दूसरों को चकाने गया था, मैं अपने को, मेरे को कैसे चकाने लग गया? और इसमें फिर कोई-कोई बीमारीयां ऐसी लोगों को हो जाती हैं कि जिसमें वो जब चाहें तब वो ठीक भी नहीं हो सकते हैं। क्योंकि जैसे ही वो चाहते हैं उनको फिर वो चकाने वाली बुद्धि फिर से उनको परास्त कर देती है। ये सब बातें सही हैं। आपको हम इसको दिखा सकते हैं। बहुत लोगों को ऐसे ही बीमारियों में जब हमने मदद करने की कोशिश की तो हठात् वो कोई भी काम कर लेते हैं, हठात्। लेकिन अगर आप कहें अब पैर हटाइये, तो नहीं हो सकता। क्योंकि उनकी खुद ही बुद्धि जो है वो परास्त हो गयी है।

अब आपने देखा है कि जो बीच में श्रीकृष्ण हैं वो लीलामय हैं। उनके लिए सब सृष्टि एक लीला है। होली भी एक लीला है। उस वक्त उन्होंने संसार में आकर जितनी भी विधि वगैरह से लोगों को बिल्कुल ग्रसित कर दिया था, उसको अच्छे से तोड़-फोड़ करके ठीक कर दिया। किसी भी विधि को नहीं छोड़ा। सुदामा को सिर पर चढ़ा लिया। उन्होंने जाकरके और विदुर के घर साग खा लिया। उन्होंने हर तरह से जितनी भी विधियां और जितनी भी पारस्परिक गंदगियां थीं उनपर ऐसी तलवार उठायी कि सब चीज को तोड़-ताड़ करके, नष्ट करके। ये सारी सृष्टि एक लीला है, उनके लिए ये लीला है। और जब सहजयोगी पार हो जाते हैं, तब उनके लिए भी सारी सृष्टि जो दिखाई देती वो एक साक्षी है। इसके और साक्षी के स्वरूप से देखते हैं। वो जो कुछ भी उनको पहले हरेक चीज से लगाव था वो टूट करके वो देखता है, अरे! ये तो नाटक था। ये तो नाटक टूट गया। अब किस लिए दौड़ रहे हैं। पहले तो जब शिवाजी महाराज आये समझ लीजिए स्टेज पर तो इन्होंने भी तलवार निकाल ली। जब वो गुस्सा करने लगे तो ये भी गुस्सा करने लगे। ये भी शिवाजी महाराज हो गये। जिस वक्त ये नाटक खत्म हुआ, कहने लगे, हे भगवान ये तो नाटक था। तो वो नाटक सब खत्म हो जाता है और मनुष्य अपनी जगह आ जाता है। ये श्रीकृष्ण की देन है। ये इन्होंने हमारी चेतना में विशेष स्वरूप दिया है। कि जब वो जागरूक हो जाते हैं तो हम साक्षी स्वरूप हो जाते हैं। और दूसरा एक महत्वपूर्ण कार्य करते हैं, क्योंकि लीलामय है कि हमारे अन्दर जो अहंकार और प्रतिअहंकार जिससे कि हम हमेशा डरते हैं और दूसरों से दबते हैं, दोनों को वो अपने अन्दर खींच सकते हैं, दोनों को अपने अन्दर समा सकते हैं। और इसलिए किसी भी अहंकारी आदमी को आप देख लीजिए। जैसे कि आपने देखा कि दुर्योधन को बहुत अहंकार था, उसको उन्होंने ठिकाने लगा दिया। साड़ी द्रोपदी की बढ़ती गयी, बढ़ती गयी, दुर्योधन थक गया, उसका अहंकार चकनाचूर। जो भी अहंकारी आदमी होता है उसपर इनकी गदा अगर चल पड़े तो वो खेल खेल में ऐसा बचा देते हैं कि वो आदमी परास्त हो जाए। उसी प्रकार अगर कोई दब्बू आदमी है, या कोई आदमी जो समाज से दबा हुआ है, जो दरिद्र है, जिसके पास सुदामा जैसे, उसका मान करना, उसके मित्रत्व को इतना बढ़ावा देना और उसके लिए इस कद्र दिल भरके दिल खोल के उसके लिए सब कुछ देना, ये भी काम श्रीकृष्ण का है। उनकी महिमा जितनी गायी जाये सो कम है। आज ६००० वर्ष हो गये वो यहां पधारे थे। उनको किसने जाना? सिर्फ गीता अर्जुन से बतायी और किसी से बतायी नहीं। पर

लिखायी किससे ? वो सोचना चाहिए। देखिए कृष्ण की लीला हर जगह किस तरह से बन्धनों को तोड़ती है। लिखाई उससे जो व्यास। व्यास जो पराशर का लड़का था, लेकिन वास्तव में वो एक धोमरनी का लड़का था। और वो भी किसी कायदे कानून का नहीं, बेकायदा। इसलिए व्यास से लिखाई कि ऐसा ही आदमी, सद्पुरुष कैसे हो सकता है ? क्योंकि जाति और उसके बन्धन और ये बहुत कायदे कानून करने वाले लोगों को दिखाने के लिए कि सद्पुरुष कहीं भी पैदा हो सकता है। सद् पुरुष की जाति, धर्म आदि कुछ नहीं पूछा जाता। लेकिन यही पूछा जाता है कि सद्पुरुष कौन है ? इसको तोड़ने के लिए, इसका सबका निषेध करने के लिए, श्रीकृष्ण ने गीता भी लिखाई तो किससे, तो व्यास से। उनको जाकर लीला देखिए तो जैसे कहते हैं कि हरेक को उन्होंने, उनकी जो चुहुल थी, उस चुहुल से हरेक को ठीक कर दिया। उनकी चुहुल बड़ी प्यारी थी. उनकी चुहुल बड़ी गहरी थी और इतनी तीक्ष्ण थी कि उसके चक्र से कोई बच नहीं सकता।

कल होली है, आप सबको होली मुबारक हो। होली के दिन हमको ये सोचना चाहिए कि कोई से भी गंदे काम करने से कृष्ण का कभी भी विचार नहीं आ सकता। गंदगी करना, गालियां देना, वगैरह, ये कृष्ण के काम नहीं है। हमको बहुत माधुर्य से एक दूसरे से बात करनी चाहिए। होली का मतलब होता है कि जो कुछ भी कृष्ण स्वयं। उनको राधा क्या थी, आह्लाद आदिशक्ति, जो दुनिया को आह्लाद दे, जिससे मन वांछित हो, चाहे ये तो आपके घर का मेहतर हो, चाहे कोई सबसे जमादार हो सबसे गले मिलिए, सबसे अपना प्रेम बांटिए। ये कृष्ण की मुख्य इच्छा थी जिस लिए उन्होंने होली का आरम्भ किया था। और हम लोग जो हैं उस वक्त सबको गाली देते हैं अपनी जबान खराब करते हैं। जो जबान श्रीकृष्ण की वजह से ही चल रही है, ये जबान भी हमारी जो सोलह चीजें हैं जैसे नाक, कान वगैरह, सब कुछ जो वगैरह सब कुछ है, ये सब को श्रीकृष्ण की आज्ञा से चलते हैं वहां हम लोग गाली गलोच करते हैं। उनकी सुभत्ता, उनकी मधुरता, उनकी मोहकता, वो हमारे जीवन में आनी चाहिए। तभी हम कहेंगे कि ये होली हुई। जिसमें कि एक तरह से हमने अपने सौंदर्य को पाया। हमने सौंदर्य को बांटा, और लोगों को इसका मज़ा दिया। लेकिन जिस तरीके से गंदगी और बहुत ही नग्नता से होली खेली जाती है, मेरी समझ में नहीं आता कि लोगों ने हरेक चीज का इतना विपर्यास कैसे कर दिया और इस कृष्ण को भी कितना अपमानित कर दिया। कल आपकी होली है, आप लोग खूब होली खेलिए। लेकिन उस कृष्ण को याद रखें, जिसने आपसे बताया कि आपको उस विराट के अंग और प्रत्यंग होना है।

"सहजयोग में एक बहुत ही साधारण बात समझने की है कि आप आत्मा हैं, और जो आत्मा नहीं है उससे आपका कोई तात्पर्य नहीं।"

—श्री माताजी

परमपूज्य श्री माता जी का प्रवचन

बोरिवली, बम्बई
१५, जनवरी, १९८४

परमेश्वर की सेवा में रहने वाले सभी साधकों को हमारा नमस्कार।

सर्वप्रथम मुझे यही पूछना था कि यहाँ पर मराठी न जानने वाले कितने लोग हैं। वे हाथ ऊपर करें। दो चार हिन्दी लोग आये हैं। ये भी सोचो मराठियों से मुकाबले का है। हिन्दी लोग तो भगवान को खोजते ही नहीं हैं। मराठी लोग दादर में इससे दस गुना ज्यादा आये थे। एक दिन मराठी लोग तो भगवान के यहाँ जाकर बैठ जायेंगे और हिन्दी लोग सब यहीं रह जायेंगे। ये लोग चार आदमी आए हुए हैं हिन्दी गुजराती लोग को तो दौलत से मतलब हो गया है, पैसा कमाने का। मराठी के मुकाबले में बैठो तो फिर जानें। भगवान के यहाँ तो पैसा नहीं गिना जाता है। कितनों को भगवान की खोज है, वही देखा जाता है ना। रात-दिन साड़ी, कपड़ा, पैसा, मकान, मोटर सब यही, इसी चक्कर में सब रहते हैं। ऐसे कितने यहाँ पर हैं गुजराती लोग कि जो परमात्मा को खोजते हैं। मैं तो उन लोगों के लिए आई हूँ, जो परमात्मा को खोजते हैं, ना कि जो पैसा खोजते हैं। उनके लिए बहुत दुनिया में घूम रहे हैं लोग। इसलिए आप मराठी में ही समझें। चार आदमी गिनकर आये हैं। मैं जानती थी, ये यहाँ नहीं हैं। यहाँ से ले करके अमेरिका तक कहीं भी जाइये, तो मराठी आदमी खड़ा रहता है भगवान के नाम पर। चाहे मराठी लोग कुछ भी हों, लड़ाका हों, झगड़ालू हों, चाहे जो भी हों, लेकिन परमात्मा के नाम पर खड़े रहते हैं, ये बात तो माननी पड़ेगी। और जब तक गुजराती लोग इसमें खड़े नहीं रहेंगे, उनको समाधान नहीं मिलने वाला। श्रीकृष्ण जैसे इतने महान अवतरण, गुजरात में आकर जिन्होंने राज्य किया, उनकी पूजा कहां ज्यादा होती है। तो पंढ़रपुर में लोग एक-एक महीना पैदल चलकर वहां जाते हैं, विट्ठल-विट्ठल करते हुए उस परमात्मा को पाने के लिए, जिसने गुजरात में और वृंदावन में सारी लीला की, इससे भी गये बीते तो ये उत्तर प्रदेश के लोग हैं। और उससे भी गये बीते बिहार के लोग हैं।

अब मैं आपको क्या बताऊं। इसलिए अब जागृत होने की बात आई है। ये सब धन-दौलत और ये चीज आपको आनन्द नहीं दे सकती। आपकी जो आत्मा है वही आपको आनन्द दे सकती है। उस आत्मा को पाइये। देखिये घरों में झगड़े शुरू हो जाते हैं। विशेषकर, मैं जब London में थी तो उन लोगों ने मुझे रासलीला में बुलाया और रासलीला में आश्चर्य-चकित हो गई कि परमात्मा की रास-लीला कर रहे थे वो। मुझे देवा करके वहाँ बुलाया और मेरे सामने सब बच्चे-बच्चियां शराब पीकर नाच रहे थे,..... आपके बच्चे तक अब रास्ते पर पड़ने पर आ गये हैं। उनकी दुर्दशा हो रही है। इस पैसे से दुनिया खराब हो गई। लेकिन अब आप लोग जागिये। जागना बहुत जरूरी है। और मैं आपसे हाथ जोड़कर विनती करूंगी कि सबको बता दीजिए कि परमात्मा का साम्राज्य आने वाला है। ये साम्राज्य नहीं चलने वाला। और उसमें अगर आना है तो जरूरी है कि परमात्मा को पहले

खोजिए, अपने आत्मा को खोजिए। फालतू के गुरु-घंटालों में घूमते रहते हैं। बड़े-बड़े organisations बना लिये हैं। इसमें पैसा दो, उसमें पैसा दो। सारे पैसे के धंधे बना रखे हुए हैं। सच्चाई पर उतरने के लिए जब तक हम लोग तैयार नहीं होंगे, तब तक कोई कार्य नहीं होगा। ये बात नहीं कि आपके गुजरात में या उत्तरप्रदेश में या मध्य प्रदेश में साधु संत नहीं। नरसी भगत जैसे वहाँ हुए। कितने नरसी भगत आज गुजरात में मिलेंगे। एक से एक संत-साधु कबीर, नानक आदि कितने बड़े-बड़े साधु संत वहाँ हो गये। लेकिन सबने उनको मलियामेट कर दिया। यहाँ तक कि बिहार में जहाँ पर कि उन्होंने 'सुरति' कुण्डलिनी को कहा था। तो वो तम्बाकू को 'सुरति' कहते हैं। बिहारी यहाँ भी बहुत से आये। नौकरी धंधे से रहते हैं। लेकिन परमात्मा की ओर किसी का चित्त नहीं।

नानक साहब ने, नामदेव के तत्व, दोहे जिसे कहते हैं, या पद कहिये, उनको अपने ग्रथ-साहब में समाया, क्योंकि वो आत्म-साक्षात्कारी थे। उस एक पद को बहुत सुन्दरता से नामदेव ने कहा। उसको मैं आपके सामने उसके भावान्तर में बताती हूँ। तो कहा है कि एक छोटा सा लड़का है, पतंग उड़ा रहा है, सबसे बात कर रहा है, हंस रहा है, खेल रहा है। सब कुछ चला है। लेकिन उसका चित्त जो है, उस पतंग में है। दूसरा, उन्होंने बताया कि औरतें गईं। उन्होंने कुंए से अपनी गागर भरी। तीन-तीन गागर अपने सिर पर रखकर चल रही हैं। आपस में हँस रही हैं, अठखेलियां कर रही हैं, बोलते चल रही हैं। लेकिन चित्त सारा उनका उस गागर पर है। तीसरा, उन्होंने बताया कि एक मां है, अपने बच्चे को गोद में रखकर, कमर पर रखकर सारे घर का गृहकृत्य कर रही है, और कभी झुकती है, कभी बैठती है, कभी उठती है, कभी बर्तन उठाती है, पर चित्त उसका सारा उस बच्चे में है। इसी प्रकार एक साक्षात्कारी आदमी का चित्त अपने आत्मा में होता है।

पर साक्षात्कारी बनने से पहले मनुष्य में इच्छा होनी चाहिए। उसमें इच्छा होनी चाहिए कि मैं परमात्मा को प्राप्त करूं, मैं अपनी आत्मा को जागृत करूं। हम लोग कोई अंग्रेज नहीं हैं, हिन्दुस्तानी हैं, हिन्दुस्तानी, और रहेंगे हिन्दुस्तानी। और भारतवर्ष में अनादि काल से एक ही बात कही गई है कि आपका चित्त कहां है? अपने चित्त का निरोध करो और उस निरोध से परमात्मा को पाओ। सारे चित्त का उसी वक्त उत्तमोत्तम दर्शन होता है, जब उसमें आत्मा का प्रकाश आ जाता है। जब यहाँ सारा अंधेरा होगा यहाँ कुछ भी दिखाई नहीं देगा। लेकिन जैसे ही यहाँ प्रकाश आ जायेगा, आप हर चीज़ को पूरी तरह से देख सकते हैं। इस बात का जागृति हमारे अन्दर कब आएगी। पैसे की जागृति तो बहुत आ गई। और दूसरे सत्ता की। दोनों चीज इन्सान को नुकसान करती हैं, ये कोई नहीं सोचता। आप किसी आदमी को १०० रूपया दे दीजिये, वो सीधे शराब की दुकान पर जायेगा, सीधे। और उसे कोई भाई Minister (मन्त्री) बना दीजिए तो काम सत्यानाश। अपना भी सत्यानाश करेगा और दूसरों का भी करेगा। उसकी वजह ही यह है, कि आदमी सत्ता और ऐश्वर्य को इसलिए नहीं भोग सकता, क्योंकि उसके अन्दर भोक्ता ही पैदा नहीं हुआ; उसके अन्दर। कृष्ण ने कहा है कि मैं ही भोक्ता हूँ। उस भोक्ता को जागृत करने के लिए ही आत्मा सिद्ध करना पड़ेगा। क्योंकि आत्मा ही आपका भोक्ता है। एक चीज आप देख लीजिए कि हमने एक बड़ी सुन्दर-सी कोई चीज खरीद ली। समझ लीजिये, ऐसी मशीन ही हमने खरीद ली तो हमने सोचा कि यह मशीन ही बड़ी मूल्यवान है। उसकी ओर ध्यान देना चाहिए, उसको सम्भालना चाहिए, उसकी परवरिश करनी चाहिए, उसको देखना चाहिए। सारा समय इसी में हमारा बीत जाता है कि उस मशीन को हम संभालें। लेकिन अगर समझ लीजिए, मशीन हमारी नहीं है, तो हम इसका उपयोग भी करें और इसके लिए हमें कोई

परेशानी भी नहीं। उसको देखना मात्र हो रहा है। जब हम 'इस चीज को पकड़ो, उस चीज को पकड़ो,' लालसा में फंसे हुए हैं, तब उस लालसा से कौन खींच सकता है। और किसी ने भी किसी लालसा से कुछ भी पाया है? उसका आनन्द कभी नहीं उठाया।

इसलिए सारा economics (अर्थ-व्यवस्था) संसार में बना हुआ है कि कोई-सी भी इच्छा मनुष्य की तो पूरी हो सकती है, पर सर्व-इच्छा नहीं पूर्ण हो सकती। याने, वो आज कहेगा, मुझे घर बनाना है। घर बना लेगा। उसके बाद कहेगा घर बना लिया, अब भई, घर से अब एक मोटर खरीदना है। मोटर खरीद ली। फिर उसे सूझेगा, मेरी लड़की की शादी करनी है। उसमें रूपया पैसा खर्च करना चाहिए। बहुत उसमें, कुछ भी दिखावा होना चाहिए। वो भी हो गया। करते-करते तो कितना भी करता जाये, जो कुछ किया उसका कोई उसे आनन्द लाभ होता नहीं। आज ये किया, फिर वो चाहिए। वो किया, तो वो चाहिए। एक लालची बंदर की तरह मनुष्य का मन एक चीज से दूसरी चीज, दूसरी से तीसरी चीज, भिखारी जैसे लगा रहता है। और मनुष्य उस भिखारीपन में ही चलता है। उसको शर्म भी नहीं आती कि मैं इस भिखारीपन को खत्म कर दूं। कभी तो बादशाह हो जाऊं। और जैसे-जैसे ये चीज ज्यादा होने लग जाती है, आदमी की एक-दम बादशाहत खत्म हो जाती है। जब पैदा होकर बच्चा आता है तो एकदम बादशाह जैसी बात करता है। ये सारी बादशाहत रहती है, खायेंगे तो वो खायेंगे, हम यहाँ नहीं बैठेंगे, हम वो नहीं करेंगे। और जैसे-जैसे इन्सान बड़ा होता जाता है तो इस आनन्द से रहित चीजों के लिए, अपना सारा खान, पान, इज्जत, सच्चाई सब कुछ खो देता है। और उसको किसी से समझाने से तो ठीक नहीं होगा। उसको तो बताने से ठीक नहीं होगा, क्योंकि ये कालिख ऐसी चीज है कि वो आदमी को एक-दम अंधा कर देती है और उस अंधेपन में वो आदमी बहकता जाता है। उसको पता नहीं कि वो किस ओर जा रहा है।

और जितना जितना कोई सा भी देश पैसे वाला हुआ, जैसे सबसे आज पैसे वाले देशों में स्वीडन आप कह सकते हैं और या तो आप स्विटजरलैण्ड कह सकते हैं कि सबसे रईस देश है। वहाँ बड़ी सफाई है, मोटरें अच्छी हैं, घर अच्छे हैं, और आश्चर्य की बात है कि वहां के सब बच्चे इसी चीज की planning (योजना) करते हैं कि किस तरह से हम खुदकशी कर लें, आत्महत्या कर लें। तीन लड़कियाँ एक बार मुझे मिलने आईं, तो मैंने उनसे कहा कि बेटे तुम्हें क्या परेशानी है? तो कहने लगीं, नहीं, ऐसी तो नहीं, लेकिन है। उनके हाथ से जैसी मुझे चैतन्य की लहरियां आ रही थीं, जैसे किसी मरे आदमी की हो, जिस तरह से। तो मैंने कहा कि ये अच्छी जवान दिखने वाली इतनी सुन्दर लड़कियां हैं। इनके अन्दर ऐसी कौन-सी भावना है जिससे ये मुर्दे जैसी, इनके अन्दर से मुझे लहरियाँ आ रही हैं, जैसे मुर्दे से आती हैं। तब उनसे मैंने पूछा, बेटे तुम लोग सोचते क्या रहते हो। कहने लगे, हम तीनों यही तय करते रहते हैं कि किस तरह से आत्म-हत्या करें। क्यों भई! तुम्हारे पास क्या खाने को नहीं है। नहीं, नहीं, वो तो बड़े रईसों की लड़कियाँ हैं। Aristocratic (ऊंचे) घराने की लड़कियाँ हैं। तुम्हारे पास कोई चीज की कमी है? तुम्हारा कहीं दिल टूट गया? ऐसी कोई बात नहीं। सब चीज प्रच्छन्न है, प्रच्छन्न तरीके से सब तरह का उनको आराम है। जहां चाहे जाएं, पूरी तरह से उनको स्वतंत्रता है। जैसे आजकल अपने बच्चे हैं। हम लोगों से लड़ते हैं कि हमें ये धंधा नहीं करने देते, हमें ऐसे डान्स में नहीं जाने देते, हमको वो नहीं करने देते, हमको ऐसे कपड़े नहीं पहनने देते। वो सब कर चुके। उन्होंने सब धंधे कर लिए। सब तरह के कपड़े पहन लिये। सब तरह

के डान्स कर लिये। सब तरह के जो कुछ भी विनाश के काम हैं सब करके अब वो बैठे हैं, जा करके किनारे पर कि भई अब तो सब कर लिया, पर आनन्द तो आया नहीं। वो आनन्द कहाँ रह गया? उसको खोज रहे हैं कि उस आनन्द को खोजें। तो उस आनन्द की तलाश में वो देख रहे हैं कि इन सब चीज़ों में कहीं आनन्द नहीं, तो जी के भी क्या करेंगे। एक चीज से दूसरी, दूसरी जगह से तीसरी जगह, बन्दर की तरह हम लटकते रहेंगे। पहले एक शाखा पर, फिर दूसरी शाखा पर, फिर तीसरी शाखा पर। ये हमारा कब खत्म होगा? इससे तो अच्छा कि अपना जीवन ही खत्म कर दो। मैंने कहा, "बेटे जीवन तो खत्म नहीं होने वाला। फिर से तुमको जन्म लेना पड़ेगा।" कहने लगे, 'मां, इस जीवन के झगड़े से हमें छुड़ा लो। किसी तरह से इससे छुड़ा लो।"

दूसरा प्रश्न जो है बाहर के देशों को देख करके हम लोग सोचते हैं कि बड़े वो लोग सुप्रसन्न और खुशहाल होंगे; सो नहीं। उनसे दुखी जीव संसार में कोई नहीं। सबसे तो वो डरते हैं। किसी से बात तक नहीं कर सकते। और रात दिन शराब पी-पी करके और इस दुनिया से भागना चाहते हैं। चाहते हैं कि हम अपनी आँख ही बंद कर लें। किसी तरह से सारी दुनिया अलग हो जाए, परे हट जाए, और हम जो हैं, शराब में डूबे रहें, अपने से भागते रहें। हमारे यहाँ कहते हैं आदमी वो शराब पीता है, जो अपना गम गलत करता है, माने अपने दुख को किसी तरह से मिटाने के लिए शराब पीता है। वहाँ उनका दुख ये है कि उनको कोई दुख नहीं है, दुनियावी। तब तो देखते हैं कि ये दुनिया है क्या? ये रात-दिन शराब में पड़े रहते हैं। नहीं तो फिर drugs (नशीले पदार्थ) लेते हैं। उसी में फंसे रहते हैं, उसमें चलते हैं, लेकिन उनमें और हम लोगों में तो भी अंतर है, बहुत बड़ा, जो कि मेरे अनुभव के अन्दर है। और मैं आश्चर्य चकित हूँ कि जब वो सुनते हैं कि हम आ रहे हैं, तो इससे दस गुना ज्यादा लोग इकट्ठे होते हैं, और एक झटके में वो पार नहीं हो सकते, क्योंकि बहुत से अन्दर दोष हैं। मेहनत करते हैं और सब पार होने के बाद भी मेहनत करते हैं। आज आपको पता होना चाहिए कि इस देश में दो सौ लोग परदेश से आये हैं। पर यहाँ दादर से भी लोग आने को तैयार नहीं। और यही पास ये रहने वाले लोग यहाँ आने को तैयार नहीं। तब इस देश की दुर्दशा कैसे ठीक होगी।

एक माँ के नाते मुझे आश्चर्य होता है कि आखिर कभी तो भगवान को खोजना चाहिए, और खासकर जब कि इतना घोर कलियुग आ गया है। चारों तरफ से आदमी tension (तनाव) में बंध गया है। जबकि देख रहे हैं कि हमारे बच्चे विनाश की ओर जा रहे हैं, जबकि देख रहे हैं कि सारे संसार में एक आफ़त मची हुई है, तब तो कम से कम परमात्मा की बात सोचनी चाहिए या नहीं? लेकिन लोग सोचते नहीं हैं। मेरी समझ में आता है कि बच्चे नहीं सोच सकते, लेकिन जो लोग रात-दिन परमात्मा का फोटो लगाते हैं उनको नमस्कार करते हैं, और काफी धर्म से भी रहते हैं, उनको ये सोचना चाहिए कि कल आपका बेटा ये पूछेगा, कि भई आखिर आप क्यों धर्म करते हैं, किसलिए आप धर्म से रहते हैं, इससे आपको क्या लाभ होने वाला है, तो आप क्या बतायेंगे? आपके पास कोई उत्तर नहीं। आप इसका कोई उत्तर नहीं दे सकते कि आप धर्म में क्यों खड़े हैं, आप धर्म से क्यों चल रहे हैं, क्यों आप अच्छाई के साथ चल रहे हैं, क्या वजह है? और उसकी वजह एक ही है कि जब आप धर्म में खड़े होते हैं तभी आपका मिलन आत्मा से हो सकता है। जैसे कि एक aeroplane (वायुयान) है, समझ लीजिये। जब तक उसमें सब screw (पेच) ठीक नहीं हो जाते तब तक वह उड़ नहीं सकता। उसी प्रकार आपकी भी उड़ान नहीं हो सकती, जब तक आपने अपने को संतुलन में

नहीं रखा। इसलिए धर्म की आवश्यकता थी। आप लोग भी धर्म में बैठ गये और धर्म में आ गये। लेकिन धर्म में आने के बाद भी आखिर करना क्या है? किसलिए इस दुनिया में हम आये हैं? भगवान ने हमको amoeba (भ्रूण) से इंसान क्यों बनाया? हमारी क्या विशेषता है? उस ओर दृष्टि करनी चाहिए। आज जो सारे संसार में आग लगी हुई है, और जो कुछ आफ़तें हैं, उसको बाहर में नहीं ठीक कर सकते। जब पेड़ बहुत ऊंचा हो जाता है, तब जरूरी होता है कि आप पेड़ की जड़ों तक देखें कि वहां पानी भी है या नहीं, क्या ये अपने स्रोत तक पहुँचा है या नहीं। अगर आपने इस पेड़ को सिर्फ़ बाह्य से देखा। उसके अन्दर अगर कोई बीमारी हो तो, उसके एक पत्ते को ही आप treatment (उपचार) देना चाहें तो नहीं दे सकते। आपको इसकी जड़ में उतरना चाहिए, और इसकी जड़ में कैसे उतरा जायेगा? इतने बढ़े हुए इस पेड़ को तो आप देख सकते हैं लेकिन इसकी जड़ में कैसे उतरेंगे?

जड़ में उतरने के लिए आपको सूक्ष्म होना पड़ेगा। बल्लभाचार्य जैसे इतने महान लोग गुजरात में हो गये और उनको पाने वाले, उनके बारे में सोचने वाले भी वैष्णव आदि अनेक हैं। लेकिन कितने लोग ऐसे हैं जो परमात्मा की ओर दृष्टि करते हैं, उससे ये भी हो सकता है कि परदेश में तो लोग परमात्मा के साम्राज्य में चले जायें, और इस योग भूमि के लोग यहीं चिपक कर रह जायें। ये इच्छा हमारे अन्दर होना, कि हम आत्मा का साक्षात्कार लें, अत्यंत स्वाभाविक होनी चाहिए। लेकिन वो है नहीं, क्योंकि हम स्वाभाविक नहीं हैं, हम नैसर्गिक नहीं हैं, हम लोग तो artificial (कृत्रिम) हो गये हैं, कृत्रिम तरीकों से रहते है, कृत्रिम बातचीत में रहते हैं। इसलिए जो स्वाभाविक चीज है, वो हमारे अन्दर से हट गई हैं, जैसे महाराष्ट्र के देहातों में जाइये, तो बैलगाड़ी पर चढ़कर, जैसी भी हालत होगी, उस हालत में लोग, हजारों लोग आ करके आत्म-साक्षात्कार लेते हैं।

एक बार तो ऐसा हुआ कि मैं जा रही थी कहीं पर एक गाँव से दूसरे गाँव। तो रास्ते पर ही सब लोग लेटे हुए थे। मैंने कहा ये कौन लेट गये हैं यहाँ। गाड़ी रोकी। सबने कहा, माँ हमको तो आत्म-साक्षात्कार दे दो। हम तो पहुँच नहीं पाये क्योंकि हम लोग दो बस करके जा रहे थे। दोनों बसें फेल हो गईं, तो हम तो यहीं तुम्हारे इंतजार में बैठे रहे। मैंने रास्ते पर कहा, लो आत्म-साक्षात्कार। रास्ते में ही वो पार हो गये, क्योंकि धन्य भाग हमारा कि ऐसे लोग थे, और धन्यभाग उनका कि वो परमात्मा को मिले। ये धन्य जीवन, ये महान जीवन आप पा सकते हैं, चाहे आप शहर में रह रहे हैं, चाहे गांव में रह रहे हैं। पर शहर की जो छकपक है और उसकी चमक है, उसके अन्दर हम खो गये है। और जो हमारे अन्दर, अत्यंत सुन्दर जो आत्मा का स्वरूप है उसकी ओर हम मुड़ते नहीं। जब हम इस आत्मा को पा लेते हैं, तभी हम जान सकते हैं कि हम कितने महान, गौरवपूर्ण, वैभवशाली और अत्यंत सौंदर्य के साधक हैं।

इस आत्मा को पाने के लिए हमारे अन्दर परमात्मा ने सर्व विचार करके और कुण्डलिनी नाम की शक्ति त्रिकोणाकार अस्थि में रखी हुई है। और इस त्रिकोणाकार अस्थि में बसी हुई कुण्डलिनी शक्ति को जागृत करना पड़ता है। ये कुण्डलिनी शक्ति, इसको शुद्ध इच्छाशक्ति कहना चाहिए, शुद्ध इच्छाशक्ति, माने, बाकी जितनी भी इच्छायें हमारे अन्दर हैं वो सारी इच्छायें अशुद्ध हैं। अगर शुद्ध होतीं तो वो पूरी होने के बाद हमारे अन्दर समाधान और शांति विराजती। लेकिन क्योंकि हमारे अन्दर समाधान और शांति विराजती नहीं हैं, इसका मतलब है, ये सब अशुद्ध इच्छाएं हैं। और इन सब अशुद्ध इच्छाओं पर हम मर रहे हैं। लेकिन जो शुद्ध इच्छा हमारे अन्दर, कुण्डलिनी नाम की शक्ति, हमारे

अन्दर स्थित है, उसकी ओर हमारी नजर नहीं। तो पहली चीज है कि आपके अन्दर शुद्ध इच्छा होनी चाहिए। अगर आपके अन्दर शुद्ध इच्छा नहीं है तो आपको मैं कैसे पार करा सकती हूँ? कुण्डलिनी शक्ति के ऊपर, परमात्मा ने इतनी सुन्दर हमारे अन्दर व्यवस्था की हुई है कि छः चक्र ऊपर और एक चक्र नीचे बनाया है, जो श्रीगणेश का चक्र है। श्रीगणेश चक्र जो है, ये इस गौरी कुण्डलिनी को, उसके पावित्र्य को संभालता है, अपनी माँ की पवित्रता को सम्भालता है। अब गणेश हैं कि नहीं? हम गणेश की पूजा तो करते हैं, गणेश को हम मानते हैं, फोटो रखते हैं, पर गणेश हैं कि नहीं। किसी डॉक्टर को अगर कहिए कि आपके अन्दर गणेश है तो वो कभी नहीं मानेगा, खासकर हिन्दुस्तानी। परदेशी मान जायेगा पर हिन्दुस्तानी नहीं मानने वाला, क्योंकि अंग्रेजों से भी बढ़कर हमारे यहाँ के डॉक्टर हो गये। ये तो अपने को अंग्रेजी सीखने से, अंग्रेज के बाप समझने लग गये। अब वो जो गणेश है वो हमारे अन्दर बसा हुआ है और वो हमारे अन्दर जागृत है। उसकी पहचान क्या है?

अब देखिये हम लोग सोचते नहीं कि जितनी जीवन्त क्रिया संसार की होती है, उसमें से एक भी हम नहीं कर सकते। एक फूल से हम फल नहीं बना सकते। और पचासों चीजें हैं, उनको तो छोड़ ही दीजिए। तो हम किस बात का इतना अपना घमन्ड करते हैं? किस बात में हम अपने को इतना बड़ा समझते हैं, जबकि हम एक भी फूल से एक फल नहीं बना सकते, जहाँ करोड़ों के करोड़ों अपने-अपने ऋतुओं में बनते रहते हैं। ये प्रचण्ड परमात्मा की जो शक्ति है, जो जीवन्त शक्ति है, उस जीवन्त शक्ति के अनेक लक्षण हैं। उसमें से पहला लक्षण ये था। देख लीजिए कि जैसे कोई आदमी है, उसका बच्चा अगर वो आदमी गुजराती है तो उसका बच्चा तो गुजराती जैसा बनेगा। अंग्रेज है, तो अंग्रेज जैसा बनेगा। इसका चयन कौन करता है, इसको कौन करता है। कोई डॉक्टर इस बात को बताये कि कैसे होता है? इसको करने वाला कौन है? इसको करने वाला श्रीगणेश है। ये श्रीगणेश हमारे अन्दर बसा हुआ है, हमारे अन्दर सुजानता, जिसे wisdom कहते हैं, वो देता है। हमारी रक्षा करता है, हमें सम्भालता है, हमारी पवित्रता हमें प्रदान करता है। और जिससे हम जानते हैं ये चीज गलत है या अच्छी है, जिसे हम सद्मत, विवेक बुद्धि कहते हैं, वो भी यही श्रीगणेश हमारे अन्दर देता है। कोई ये क्यों नहीं सोचता कि ये सद्मत विवेक बुद्धि का स्रोत क्या है, और ये कहाँ से हमारे अन्दर आती है? हम तो बड़े ऊपरी तौर से देखते हैं, और जितना भी पाश्चात्य शिक्षण है वो बहुत ऊपरी तौर का या जिसे कहना चाहिए एकदम shallow (उथला) है, उसमें कोई भी गहनता नहीं कि उसको समझे। तो इन दोनों ज्ञान का जब मेल होगा, तभी चीज ठीक बैठेगी।

जैसे कि सहजयोग से आप जानते हैं कि कैंसर ठीक होता है, और हमने अपने President (राष्ट्रपति) साहब संजीव रेड्डी का कैंसर ठीक किया। इसमें कोई शक नहीं। आप चिट्ठी लिखकर पूछ लीजिए। वो अमेरिका गये थे। वहाँ उनका failure असफल हो गया, वो बच नहीं सकते थे। तब इत्तफाक से मैं लन्दन में गई थी, उनसे मिलने। वो तो मैं दूसरे ही दर्जे में गई थी, अपने पति के साथ। पर किसी को मेरे बारे में मालूमात था, और दस मिनट के अन्दर उनकी तबियत ठीक हो गई। अब सहजयोग से कैंसर का रोग कैसे ठीक होता है लोग कहेंगे? और किसी चीज से हो ही नहीं सकता। आप कर लीजिए। कारण ये है कि कुण्डलिनी के जागरण से, ये जो छः चक्र हैं, ये आलोकित हो जाते हैं, और जब ये छः चक्र आलोकित हो जाते हैं तो इसमें बसे हुए देवता भी जागृत हो जाते हैं। अब आप देख लीजिए कि हमारे left और right hand को अगर हम इस तरह से करें, तो

तो ये मेरुदण्ड तैयार हो गया। और ये जो बीच का हिस्सा है, ये जो है, मध्य में, यहाँ पर चक्र बनते हैं, left में left sympathetic होती है और right में right sympathetic। दो तरह की हमारे अन्दर मज्जा व्यवस्था है, जिसे कि हम nervous system (नाड़ी व्यवस्था) कहते हैं। अब ये बीच में जो चक्र तैयार हुआ है, इस चक्र से ही जो हमारी शक्ति आती है, वो सब दूर बहती है और उसी से सब जगह लाभ होता है। जब इस चक्र में दोष हो जाता है, तभी आप बीमार पड़ जाते हैं। अब अगर आप बाहर से किसी पेड़ को, उसके फूलों को या उसके पत्तों को दबा दें तो थोड़ी देर के लिए तो ठीक हो जायेंगे, फिर सत्यानाश हो जायेगा। पर अगर उसकी जड़ में, उसके जो चक्र हैं, उन चक्रों को अगर आप ठीक कर दें, तो बीमार पड़ने की कोई बात नहीं। और उससे भी बढ़कर बात तो ये है कि जो ये शक्ति है, ये परमात्मा की शक्ति है, जिसके सहारे हम जन्मते हैं, जिसके सहारे हम बढ़ते हैं, जिसके सहारे हम जीते हैं, जिसके सहारे सारे संसार में यह सृष्टि हुई, वो शक्ति अगर हमारे से अव्याहत पूरे समय बहने लग जाये, तब फिर कौनसी बीमारी हमें आ सकती है? फिर हमें जन्म, मरण, मृत्यु सबसे छुट्टी मिल सकती है। इतना ही नहीं बल्कि हर समय हम एक बड़े ही आनन्द से विचरण करते हैं।

अब ये तथाकथित या ऐसी ही बातें नहीं हैं। ये असलियत है, और ये चीजें सब हमारे अन्दर हैं। लेकिन हमारा विश्वास ऐसे आदमी पर नहीं होता जो रूपया पैसा नहीं लेता, जिसका कोई organisation (संस्था) नहीं होता। जो धूमकेतू जैसा घूमता है। आज यहाँ प्रोग्राम दिया गया। ऐसे इंसान पर हमारा विश्वास नहीं होता है। हमारा तो विश्वास ऐसे आदमी पर होता है, जो कुछ नाटक खेलता है, एक organisation (संस्था) बना लिया। अब उसमें पैसे दो, स्वामीनारायण। कितने लोग उसमें पागल हो रहे हैं, मेरी समझ में नहीं आता है, उसमें क्या कमाने का है, और क्या करने का है। एक आदमी को मैंने देखा नहीं कि जो पार हो गया कितने ही ऐसे organisations हैं। एक नाम मैंने कहा, पच्चीसों ऐसे organisations मैंने देखे हैं। मैंने तो आजतक कोई एक भी ऐसा organisation नहीं देखा है कि जिसमें कोई किसी को पार कराता है। Special organisations बनते जाते हैं। अरे भई भगवान को तुम क्या organise करोगे। हम तो भगवान को भी सोच रहे हैं उसको भी organise करने का। कभी President बना दिया भगवान को, तो कभी Vice-President बना दिया। इंसान की बुद्धि इतनी सर्वनाश पर पहुँची हुई है कि वो भगवान को भी ठिकाने लगाने बैठ गया। क्या उस परमात्मा को जिसने हमें बनाया, जिसने ये सारी सृष्टि रची है, उसको क्या हम organise कर सकते हैं? बेहतर तो यह है, कि एक बूंद जैसे सागर में मिल जाती है, इसी तरह उस सागर में मिल जाओ। वो अपने आप organised है।

अभी तक तो उसकी, परमात्मा की लीला ही को नहीं जानते। उसके कायदे, कानून नहीं जानते उसके साम्राज्य ही में नहीं आये। और फिर लोग मुझे आकर कहते हैं कि माँ हमने तो इतनी भक्ति परमात्मा की की तो भी हमें कैंसर हो गया। लोग कहते हैं कि परमात्मा में क्यों विश्वास किया जाये, जब उनके भक्त ही इस तरह से मरते हैं। किसी को कोई बीमारी हो जाती है, किसी को कोई बीमारी हो जाती है, या तो किसी को कोई दुख हो जाता है। किसी पर परेशानी आ जाती है। लेकिन श्री कृष्ण ने कहा है कि "योग क्षेम वहाम्यहम्" और जब नित्य अभियुक्त हो तब। मतलब हर समय जो परमात्मा से एकाकार हो, उनसे सम्बन्धित हो, तब वो योग कराके और फिर क्षेम करते हैं। पहले योग घटित होना चाहिए और फिर क्षेम होता है। ये तो नहीं कि आप मंदिर में गये, पांच रुपये रख दिये, काम खत्म। भगवान जी अपने हाथ में आ गये। बहुत से लोग हैं,

गणेशजी को लगा दिया, बैठ जाओ। जैसे कोई उनके नौकर हैं। उनके घर सम्हालने के लिए और सब चीज के लिए, यहां बैठ जाओ। अरे वो परमात्मा हैं बाबा, वो भगवान हैं। उसको पूजा, अर्चना समझना चाहिए। पर उस पूजा, अर्चना का भी कोई अर्थ नहीं लगेगा, जब तक आपका connection (योग) ही नहीं। जैसे समझ लीजिए इसका (माइक का) connection नहीं हो, तो यहां मैं कितना भी चिल्लाऊं, उसमें से तो आवाज जाने वाली नहीं। पहले connection तो होना चाहिए। जब तक हमारा परमात्मा से connection नहीं होगा तब तक ना हमारे पूजा में कुछ है, ना किसी चीज में कुछ लगता है।

जैसे कृष्ण ने ही खुद कहा है, वो भक्ति मार्ग में उन्होंने कहा है। वो बहुत होशियार आदमी थे, और वो जानते थे कि इन्सान सीधे उंगली से ठीक नहीं आयेगा। टेढ़ी उंगली से ही घी निकलेगा इन्सान से। तो उन्होंने एक टेढ़ी बात कही। एक नहीं, दो तीन टेढ़ी बातें ऐसी गीता में तो कह दीं जो खोपड़ी में लोगों के नहीं आ सकतीं। पहली तो बात उन्होंने ये कही कि बेटे तुम परमात्मा को पाओ, ज्ञान को पाओ। ज्ञान को पाना माने बुद्धि में किताबें पढ़ना नहीं। ज्ञान के माने, आपका जो central nervous system है उसमें जाना जाये, जिसे मराठी में 'जाणीव' कहते हैं। उसको जो जाना जाये, माने आत्मा को पाओ। क्योंकि दुकानदार थे नहीं। इसलिए बढ़िया चीज पहले कह दो। दुकानदार पहले घटिया से बढ़िया पर जाता है। पर परमात्मा थे तो उन्होंने पहले बढ़िया चीज कह दी कि इसको पाओ। लेकिन अर्जुन ने उनसे शंका की तो उन्होंने कहा कि इसको समझाने का तरीका और है। ये सीधे उंगली से घी नहीं निकल सकता। आप समझने की कोशिश करिये, बहुत बुद्धि चातुर्य चाहिए। कृष्ण को समझने के लिए बुद्धि चातुर्य चाहिए क्योंकि विराट का सारा brain (मस्तिष्क) श्रीकृष्ण हैं। तो आप समझ सकते हैं कि जितना भी जो आपका brain है उन्हीं के चरणों की धूल के बराबर है। तो उसको समझने के लिए बुद्धि चातुर्य चाहिए। अगर आप में चातुर्य नहीं है तो आप समझ नहीं सकते, उनकी चातुरी। तो उससे ये कहा कि तुम जो कुछ कर्म करो वो परमात्मा के हवाले करो। मैं इसका एक किस्सा ऐसा सुनाती हूं, कि एक बेटा बाहर बैठा है और खूब जोर से हंटर मार रहा है। और घोड़ा पीछे में, गाड़ी आगे में। उसका बाप आता है। उससे कहता है, "बेटा, घोड़ा आगे कर लो तब गाड़ी चलेगी।" वो कहता है, "नहीं, मैं यहीं बैठकर घोड़े को मारूंगा।" अच्छा ठीक, तू घोड़े को मारता रह यहीं बैठकर, चित्त अपना घोड़े पर रखे हुए।" हो ही नहीं सकता। ऐसी असम्भव बात कह डाली कि जिससे मनुष्य महामूर्ख बन जाए। और वही आप लोग बन गये। जब उन्होंने कहा कि सब कर्म करो और भगवान पर छोड़ो। आप छोड़ ही नहीं सकते। जब तक आप पार नहीं होंगे, आप अकर्म में उतर ही नहीं सकते हैं। क्योंकि इन्सान जब सीधे रास्ते नहीं चलता, तो उसको बेवकूफ़ बनाना पड़ता है। तो उन्होंने कहा सब कर्म करो। बहुत लोग आते हैं मेरे पास। "माताजी मैं सारा कर्म करता हूँ और मैं सब भगवान पर छोड़ता हूँ।' मैंने कहा, कैसे छोड़ते हो? कौन-सा मार्ग है? कौनसा तरीका है? नहीं, मतलब ये है कि मैं कहता हूँ कि भगवान तू ही सब काम करता है। मैंने कहा कल तुम murder (हत्या) करोगे, तो भी भगवान ही करता है? सब चीज भगवान करता है, ये कोई तरीका हुआ? बुद्धि से आप अगर समझ लें कि भगवान आपकी जेब में है तो गलत बात है। ऐसा कहना कि जो भी मैं कर्म करता हूँ, परमात्मा पर डालता हूँ, अपनी दिशा भूल कर देना है। अपने को गलत तरीके पर डाल देना है। जब तक आप आत्मा से एकाकार नहीं होंगे, तब तक आप जो भी कर्म करते हैं, उसका भोग

आपके ऊपर है, क्योंकि आपका अहंकार अभी बना हुआ है।

यहाँ अहंकार को आप देखिये, कहाँ पर आपकी स्थिति, कहां अहंकार आपके सामने। जो भी आप कार्य करते हैं, उसमें निकलता हुआ धुंआ आपको अहंकार में डालता है। कोई आदमी कहे कि मुझे बिलकुल अहंकार नहीं, हो ही नहीं सकता। अहंकार के सिवाय मनुष्य हो ही नहीं सकता। उसके अन्दर अहंकार होगा। किसी में ज्यादा, किसी में कम। लेकिन अहंकार होता है। जब कुण्डलिनी का जागरण होता है और जब आज्ञाचक्र को वो भेदती है, और वहां जब महाविष्णु का जागरण होता है, तभी अहंकार और प्रतिअहंकार दोनों खिच जाते हैं। मनस और अहंकार दोनों खिचने की वजह से ही, यहाँ की जो जगह है, जिसे कि 'ब्रह्मरन्ध्र' कहते हैं, वो खुल जाता है। और जब तक कुण्डलिनी का जागरण हो करके आप पार नहीं होंगे, तब तक ये कहना कि मैं जो भी कर्म करता हूँ परमात्मा पर छोड़ता हूँ, ये गलत बात है। फिर मैं भक्ति करता हूँ, भगवान की भक्ति। भक्ति भी भगवान ने कह दिया, साफ-साफ। साफ कहा। नहीं कहा, क्योंकि निर्बुद्धों को नहीं समझ में आने वाला, पर सुबुद्ध को समझ में आयेगा। साफ कह दिया कि 'अनन्य' भक्ति करो भाई। उन्होंने कहा कि पुष्पम, पत्रम, फलम, तोयम, जो भी कुछ होगा, वो मैं लूंगा। देने के time कहते हैं कि 'अनन्य' भक्ति करो। 'अनन्य' माने जब दूसरा कोई नहीं होता है। माने जब आपका connection (योग) परमात्मा से हो जाता है, तभी वह भक्ति है, नहीं तो अर्थ क्या है? अगर टेलीफोन में आपका connection नहीं है तो आप टेलीफोन किसको करेंगे?

इसलिए लोग बिठ्ठल, बिठ्ठल, बिठ्ठल कहते, कहते चले जा रहे हैं। बिठ्ठल तो गया। उनकी विशुद्धि पकड़ती है, जो श्रीकृष्ण का चक्र है। बहुत से लोग अपने घर में बैठकर बहुत जोर जोर से भजन गायेंगे, जिससे सब लोग, सो न सकें। दिखाने के लिए कि हम बड़े भारी भगत हैं भगवान के, ये 'हरे रामा' वाले वहाँ पर बदतमीजी करते हैं, ऑक्सफोर्ड स्ट्रीट में। धोती पहननी नहीं आती, और बाजार में बोदी मिलती है। बाल मुंडवा कर वहाँ पर ऐसी बोदी चिपकाते हैं, और बाल नहीं मुंडवाये तो ऊपर से प्लास्टिक लगाके तमाशा करने के लिए ऐसे, और ऊपर से बोदी लगाते हैं। और ऑक्सफोर्ड स्ट्रीट में वहाँ भरे बाजार में खड़े होकर डान्स करते हैं। औरतें भी, उनकी धोती भी छूटती है साड़ी भी छूटती है। बेवकूफ कहीं की, और कहें हम परमात्मा को भज रहे हैं। 'हरे राम, हरे कृष्ण' कर रहे हैं। ये 'हरे राम, हरे कृष्ण' करने का कोई तरीका हुआ? कोई उसमें, किसी भी तरह की इज्जत नहीं हुई, भगवान उनको बेइज्जत करता है, और उन सबको यहाँ कैंसर हो जाता है throat (गले) में, जो कि श्रीकृष्ण का स्थान है। फिर मेरे पास आते हैं कि माँ हमें ठीक कर दो। और मेरे पास उनके वो भक्ति वेदान्त आये थे। तो मुझे कहने लगे कि आपने "कुछ छोड़ा ही नहीं माँ। अब तो मर गये बेचारे, कुछ छोड़ा ही नहीं, माँ।" आप तो सारे ऐश्वर्य में बैठे हैं, और भगवान की बात कैसे करते हैं? मैंने कहा, कोई मेरा ऐश्वर्य-वैश्वर्य नहीं है। मैं तो अपने ऐश्वर्य में हूँ। जो अन्दर का है। वो तो मेरे पति और ससुराल का ऐश्वर्य है, उसमें बैठी हुई हूँ। मुझे इससे कोई मतलब नहीं। मैंने कहा, मैं जब कुछ पकड़ा ही, नहीं तो मैं क्या छोड़ने वाली हूँ? मैंने कोई चीज पकड़ी नहीं है। अच्छा, मैंने कहा, देखो भाई, तुमको इस घर में कोई सी भी चीज ऐसी दिखाई दी, या मेरे ऊपर में, जो कि उस श्रीकृष्ण के पांव के धूल के बराबर हो? और होनी चाहिए, तो तुम उठा लो। देखने लगे इधर-उधर, इधर-उधर। उठाओ, मैंने कहा, कोई सी भी चीज मांग लो, मगर उनके पांव के धूल के बराबर होनी चाहिए। मैंने कहा, फिर तुमने छोड़ा क्या है? धूल, पत्थर, मिट्टी क्या

छोड़ा ? छोड़ दिया, हमने तमाशे करने के लिए, दिखाने के लिए। मारे दिखाने के नंगे होकर घूम रहे हैं। दिखाने के लिए ये कर रहे हैं। अन्दर तो परमात्मा की कोई भी शक्ति नहीं है।

जिस आदमी के अन्दर परमात्मा की शक्ति होती है, यदि हाथ रख दे, तो आदमी ठीक हो जायेगा, नजर कर दे ठीक हो जायेगा, आकर खड़ा हो जाये तो ठीक हो जायेगा। सारे अशुभ काम संसार में हो रहे हैं, और अपने को बड़े भगवान के भगत समझते हैं, और कहते हैं कि हमने ये परमात्मा का काम किया, वो परमात्मा का काम किया। ये सारे काम परमात्मा के नहीं, ये मनुष्य के काम हैं। जैसे बहुत से लोगों में ये भी बीमारी है, जब बहुत पैसा हो जाये तो social work (समाज कार्य) करना। ये भी एक नमूना होता है। उससे फिर ये कि social work किया तो हार पहनाओ उनको, और उनकी बड़ी इज्जत करो और उनको कुछ रुपया पैसा चढ़ाओ। ज्यादातर लोग तो social work पैसा खाने का ही करते हैं। वो नहीं किया तो बाकी का social work भी क्या होता है ? जैसे अब है कि कोई दूसरा ही नहीं रह जाता। जब मेरी ही उंगली है और इसको दुख है, और इस उंगली को मैं अगर ठीक कर रही हूँ, तो मैं कौनसा social work कर रही हूँ। अगर आप दूसरे कोई हैं ही नहीं। जब एक विराट के शरीर के अंग-प्रत्यंग हैं, तो उसका कौन social work आप करिएगा। अपनी ही तो आप ठीक कर रहे हैं। उसमें कौनसा social work हो सकता है। फिर उसके लिए तमगे देते हैं और उसमें शांति के बड़े ये देते हैं कि शान्ति इन्होंने दी, तो एक इनके लिए शान्ति की पताका लगाओ इनके सिर पर। हालांकि अगर उस इन्सान के हृदय में झांक कर आप देखें, उसके मन में जरा भी शान्ति नहीं। वह आदमी बहुत अशांत है। इसलिए इन झूठी चीजों में परमात्मा नहीं। परमात्मा सच्चाई में हैं। सच्चाई से परमात्मा को जाना जाता है। अपने में सच्चाई रखो, कम से कम। जिसने अपने में सच्चाई रखी है उसमें परमात्मा जरूर प्रगट होंगे।

और ये दिन आ गये हैं, ये विशेष दिन आ गये हैं ? जबकि आप जानते हैं, नल-दमयन्ती का एक संवाद बड़ा सुन्दर है कि नल को एक बार कलि मिल गया। नल और दमयन्ती का बिछोड़ा हुआ था, तो नल कलि से बहुत नाराज था। उसने उसकी गर्दन दबोच दी और कहा कि अब तो मैं तुझे मार ही डालूंगा क्योंकि तूने मेरे साथ इतनी दुष्टता की। तेरा कोई महात्म्य नहीं कि तू इस संसार में रहे। तेरा नाश ही हो जाना चाहिए। तो कलि ने कहा, भाई तू मुझे मार डाल मैं तुझे मना नहीं करता। पर एक बात है कि मेरा अभी महात्म्य है। कहने लगे क्या महात्म्य है बताओ, तुम्हारा क्या महात्म्य है ? जब तुम संसार में आते हो तो लोग भ्रान्त हो जाते हैं। आपस में झगड़ा हो जाता है, परेशानी हो जाती है। झूठे हो जाते हैं, कृत्रिम हो जाते हैं। गरदन काटते हैं। तुम्हारा कोई फ़ायदा नहीं। तुम इन्सान को राक्षस बना देते हो। और वो अंधेपन में अपना बहकता है। उसको ये समझ ही नहीं आता कि वो क्या करे। कहा, मेरा महात्म्य है कि जिस वक्त मेरा राज्य संसार में आयेगा, उस वक्त जो ये गिरि कंदराओं में साधु संत घूम रहे हैं, ये एक साधारण गृहस्थ की तरह से रहेंगे, और उसी वक्त उनका कल्याण होगा। उसी वक्त उनको आत्मा प्राप्त होगी। आज वही साधु संत आप लोग बनकर यहाँ आये हुए हैं, ये समझ लेना चाहिए। कोई विशेष ही कृपा है, जिसमें आप आये हैं। पूर्व-जन्म का संचित है इसलिए आये हैं। उस पूर्वजन्म के संचित को आपको आज पा लेना है।

जैसे कि एक Cashier बैंक में होता है, ऐसे ही मैं हूँ। मेरा कोई लेना-देना आपसे नहीं बनता है। हाँ, मां का प्यार जरूर है। और चाहूँगी कि आप सब पार हो जायें। आपके अन्दर बसी हुई कुण्ड-

लिनी जागृत हो जाये । ये अत्यंत हृदय से मैं चाहूँगी, और उस पर मेहनत करूंगी। लेकिन मेरा कोई आप पर उपकार नहीं है। मैंने कुछ आपके साथ विशेषता नहीं करी। जो आपकी अपनी कुण्डलिनी है और आपकी अपनी आत्मा है, उस कुण्डलिनी का जागरण करके आपको अगर मैंने आपका ही धन दे दिया, तो उसमें कौनसी विशेषता है ? इसमें कोई अहंकार करने की बात नहीं है। बहुत से लोग ऐसा कहते हैं कि मां आप ही ये काम क्यों करती हैं ? मैंने कहा बेटे तुम करो, मैं बड़ी खुश होऊंगी। मेरे अपने बच्चे हैं, बच्चों के बच्चे हैं। उन सबको छोड़कर मैं जंगलों में घूमती हूँ। अगर तुम ये काम कर लो तो मैं तो छुट्टी कर जाऊं। मुझे बड़ी खुशी होगी। लेकिन कर नहीं सकते ना। बड़ी मेहनत का काम है। मेहनत भी है, प्यार भी है और इतना इसके लिए जान लगानी पड़ती है। क्या तुम लगा लोगे ? अगर लगा सकते हो तो लगा लो। मैं तो बड़ी खुश हूँ। तुम आकर बैठो, तुम्हारा वरण हो जाये। इससे भी मोटा हार मैं तुमको पहना दूंगी। लेकिन हो नहीं सकता। क्या करूं ? भगवान ने मेरे ही सिर पर ये काम भेज दिया। उसमें इतना अहंकार क्यों दुखी होता है तुम्हारा ? और जिस वक्त तुम पार हो जाओगे, तुम भी ये काम कर सकते हो। तुम भी दूसरों को पार करा सकते हो, तुम भी दूसरों को दे सकते हो। पर एक तरह से जो बहुत ही उच्छृंखलता और shallowness (उथलापन) हमारी life (जीवन) में आ गई है, बच्चों में भी, इस कदर जो हम लोग जो बिलकुल उच्छृंखल और बिलकुल ही ऊपर के सतह पर रहने वाले लोग हैं, उनके अन्दर इस शक्ति का जागरण कठिन हो जाता है। क्योंकि वो बिलकुल ही गहनता से दूर, जैसे कि उखड़े हुए लोग या उखड़ा हुआ एक पेड़ इधर से उधर पानी के प्रवाह से बहता रहता है, कहीं अटकता है, कहीं लगता है, कहीं दौड़ता है, उसकी अपनी कोई भारता नहीं होती, उसी प्रकार ऐसे लोगों की हालत हो जाती है।

इसलिए इस धरती पर, विशेषकर यह धरती, महाराष्ट्र की जो धरती है, इसे महाराष्ट्र इसलिए कहा गया है कि यहां साढ़े तीन वलय में कुण्डलिनी साक्षात बैठी हुई है। सारे विश्व की कुण्डलिनी इस महाराट्र में हैं। विशेष वंदनीय जगह आप आये हुए हैं। और जो भी आप जहाँ से भी आये हैं, चाहे गुजरात से आये है, चाहे बंगाल से आये हैं, ये यहाँ पर आपको इस पुण्यभूमि में विशेष रूप से परमात्मा के दर्शन होने वाले हैं, इसलिए आप आये हुए हैं। श्रीराम जो जब इस पर आये और श्रीसीता, जो कि साक्षात आदिशक्ति थीं, उन्होंने सब अपने पांव के जूते उतार दिये थे, और नंगे पैर इस भूमि पर उन्होंने चला। लोग इसको समझ ही नहीं पाते कि क्यों नंगे पैर श्री राम चलते थे। कितनी महान भूमि पर आप बैठे हुए हैं। फिर इस भूमि के उपयोग से आप कहां से कहाँ तक पहुँच सकते हैं। अपने अन्दर की जो महानता है, अपने अन्दर का जो गौरव है, उसके प्रति नजर करें और सोचें कि हम भी इसे पा सकते हैं। हम भी आत्मा हैं, हमारे अन्दर सब शक्ति है। तो क्यों ना पाय ? इसकी जरूरत नहीं कि आप बड़े-बड़े रईस हों, या आपके घर में हाथी झूमते हों, कोई जरूरत नहीं। जब तक आप मां के हृदय में हैं, काम खत्म। उससे ज्यादा आपको कुछ करने का नहीं है। और आशा है आज भी यह कार्य हो सकता है।

सहजयोग के बारे में हजारों lectures (भाषण) मेरे हो चुके हैं, लन्दन में तो ना जाने कितने इंग्लिश में हुए हैं। इसके अलावा अमेरिका और हर जगह मैं बोलती रहती हूँ। हर जगह मेरे अनेक lectures हो चुके हैं। एक lecture में पूरी बात कहने की नहीं है। लेकिन यह नहीं कि अभी किसी और का lecture चल रहा है, फिर माताजी का lecture सुन लिया और चले। ये बहुत गलत बात है। क्योंकि

जागृति के बाद में जमना बहुत जरूरी है। जब आपकी जागृति हो जाती है, उसके बाद आपको जमना चाहिए। जैसे अंकुर निकलने के बाद बीज जम जाता है। बीज जमने के बाद ही उसका पेड़ हो सकता है। नहीं तो उसका फलस्वरूप कुछ नहीं है और सब व्यर्थ हो जाता है। इसलिए मेरी हाथ जोड़कर विनती है, आप सबको बहुत है कि कृपया अपनी आस्था और अपने प्रति आदर होना चाहिए। अपने जीवन के प्रति एक तरह की मान्यता का विचार होना चाहिए। इसकी क्या मान्यता है मैं मनुष्य हूँ। मैं इतनी योनियों में से आज मनुष्य बनकर आया हूँ। और मुझे आत्मा बनने का है। और इस आत्मा के प्रकाश में मुझे चलने का है, जिससे कि मैं परमात्मा के साम्राज्य में अनन्त जीवन और अनन्तकाल तक आनन्द में रहूँ। इससे आपके घर की, आपके बच्चों की, आपके मुहल्ले की, आपकी सारी व्यवस्था में सबमें आमूल रद्दोबदल आ जायेगा। और वो दिन दूर नहीं जब हम लोग वो बहुत बड़ा स्वर्ण-दिन देखेंगे।

With

best

compliments

from :

INDCON UDYOG

407 MANSAROVER, 90, NEHRU PLACE,

NEW DELHI-110019

श्री माताजी निर्मला देवी के १०८ नाम

श्री ललित सहस्रनाम में दिये १००० नामों में से १०८ नाम नीचे दिये हैं। ये नाम देवी के विस्तीर्ण क्षेत्र के केवल कतिपय पहलुओं पर संकेत करते हैं। मन्त्रोच्चारण के समय चित्त माताजी श्री निर्मला देवी पर केन्द्रित रहे।

उच्चारण विधि : रिक्त स्थान पर नाम का उच्चारण करें।

ॐ साक्षात्.....नमो नमः।

श्री माताजी	भक्ति प्रिया
श्री महाराज्ञी	भक्ति गम्या
देवकार्य समुद्यता	शर्म दायिनी
अकुला	निराधारा
विष्णु ग्रन्थिविभेदिनी	निरंजना
भवानी	निर्लेपा

निर्मला
निष्कलंका
नित्या
निराकारा
निराकुला
निर्गुणा
निष्कला
निष्कामा
निरूपप्लवा
नित्य मुक्ता
निर्विकारा
निराश्रया
निरंतरा
निष्कारणा
निरूपाधिः
निरीश्वरा
नीरागा
निर्मदा
निश्चिन्ता
निरहंकारा
निर्मोहा
निर्ममा
निष्पापा
निःसंशया
निर्भवा

निर्विकल्पा
निराबाधा
निर्नाशा
निष्क्रिया
निष्परिग्रहा
निस्तुला
नीलचिकुरा
निरपाया
निरत्यया
सुखप्रदा
सांद्र करुणा
महा देवी
महा पूज्या
महापातक नाशिनी
महाशक्तिः
महामाया
महारतिः
विश्वरूपा
पद्मासना
भगवती
रक्षाकरी
राक्षसघ्नी
परमेश्वरी
नित्ययौवना
पुण्यलभ्या

अचिंत्य रूपा
पराशक्तिः
गुरूमूर्तिः
आदिशक्तिः
योगदा
एकाकिनी
सुखाराध्या
शोभना सुलभागतिः
सत्चित्आनन्द रूपिणी
लज्जा
शुभकरी
चण्डिका
त्रिगुणात्मिका
महती
प्राणरूपिणी
परमाणुः
पाशहंत्री
वीरमाता
गम्भीरा
गर्विता
क्षिप्रप्रसादिनी
सुधास्त्रुतिः
धर्माधारा

विश्वग्रासा
स्वस्था
स्वभावमधुरा
धीरसमर्चिता
परमोदारा
शाश्वती
लोकातीता
शमात्मिका
लीलाविनोदनी
श्री सदाशिव
पुष्टिः
चंद्रनिभा
रविप्रख्या
पावनाकृतिः
विश्वगर्भा
चित्शक्तिः
विश्वसाक्षिणी
विमला
वरदा
विलासिनी
विजया
वण्दारु जन वत्सला
सहजयोग दायिनी

卐 जय श्री माता जी 卐

गीत

हे माँ ! तेरी शरण जो आता है,
निर्भय वह हो जाता है।

दुख-दर्द भूल जाता है,
आनन्द मग्न हो जाता है।

स्वच्छन्द विचरता है जग में,
गीत प्रेम के गाता है।

जहाँ जहाँ जाता है,
प्रेमानन्द बरसाता है।

निर्लिप्त रहता सुख-दुख में,
जीवन सहज बनाता है।

'मैं' और 'मेरा' नहीं रह जाता,
जब तेरा हो जाता है।

सब कुछ पा जाता सहज में,
जीवन धन्य हो जाता है।

दिव्य देखता है कण कण में,
दिव्यता से भर जाता है।

मुक्त उन्मुक्त हो जाता है,
जो तुझमें मिल जाता है।

प्रेमामृत का पान करता,
'अमर' वह हो जाता है।

ॐ शांति

—सी० एल० पटेल

Registered with the Registrar of Newspapers under Regn. No. 36959/81

卐 जय श्री माताजी 卐

माँ निर्मला भजलो मनवाँ
निर्मल निर्मल होई

बाग लगायो महल बनायो
मेरी तेरी छोड़ दे मनवाँ
ये सब मिथ्या होई

माँ निर्मला भजलो मनवाँ
निर्मल निर्मल होई

मन ही मन्दिर मस्जिद है
मन ही है गुरुद्वारा
ज्योती से ज्योति जलालो मनवाँ
निर्मल निर्मल होई

माँ निर्मला भजलो मनवाँ
निर्मल निर्मल होई

ना जानूं मैं वेद पुराण
ना जानूं मैं गीता
तेरी शरण में गाके मनवाँ
निर्मल निर्मल होई

माँ निर्मला भजलो मनवाँ
निर्मल निर्मल होई

जनम जनम से भटके मनवाँ
अब तू पायो माँ
छण छण को तू कीमत करले
माँ ही तेरी होई

माँ निर्मला भजलो मनवाँ
निर्मल निर्मल होई

जय श्री माताजी

—मनोरमा पान्डेय

Edited & Published by Sh. S. C. Rai, 43, Bunglow Road, Delhi-110007 and
Printed at Ratnadeep Press, Darya Ganj, New Delhi-110002.
One Issue Rs. 7.00, Annual Subscription Rs. 30.00 Foreign [By Airmail £ 7 $ 14]